# समाजवादी बुलेटिन

# नेताजी
## अमर रहें

# श्रद्धांजलि

नेता जी आज भी प्रेरणा के रूप में हम सबके बीच हैं। मेरे अस्तित्व का आधार वही रहे हैं और हमेशा रहेंगे। मेरे मुख्यमंत्री बनने व राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने में सबसे बड़ा आशीर्वाद मुझे उनका ही मिला था।

नेताजी धरती पर उतरकर संघर्ष करते हुए, चोट खाते हुए ही धरतीपुत्र बने। उन्होंने समाजवादी मूल्यों के साथ जन-जन के लिए जो सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक लड़ाई लड़ी, हम उसे हमेशा जारी रखेंगे। हमारा ये संकल्प ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि है।

समाजवादी बुलेटिन
अक्टूबर 2022
वर्ष 23 | संख्या 12


*प्रिय पाठकों,*
*आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन बदले हुए कलेवर में अपने दूसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। आपके उत्साहवर्धन और प्रेम के कारण ही हमारा यह सफर यहां तक पहुंचा है। हम भरोसा दिलाते हैं कि हम आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की अपनी कोशिशों में कोई कमी नहीं आने देंगे। कृपया हमेशा की तरह आगे भी हमारा मार्गदर्शन करते रहें।*
*धन्यवाद!*


प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक
प्रोफेसर रामगोपाल यादव
☎ 0522 - 2235454
samajwadibulletin19@gmail.com
bulletinsamajwadi@gmail.com
Mob:- 9598909095
/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए
19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित
अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97


# अंदर

धरतीपुत्र की यात्रा गगन तक 04

14 कवर स्टोरी
## नेताजी अमर रहें

## बड़ी विरासत के स्तंभ 50

भारत का इतिहास जब तक रहेगा और इस दुनिया में नफरत की ताकतों से लड़ने वाले जब तक रहेंगे तब तक मुलायम सिंह का नाम अमर रहेगा। उनका साहस और संघर्ष का जज़्बा और तमाम विरोधी ताकतों के साधने की क्षमता सभी को समझ में आती थी। सभी उसके कायल थे।


ऐसे थे मुलायम 56
समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय व राज्य सम्मेलन संपन्न 68

# धरतीपुत्र

## की यात्रा गगन तक

उदय प्रताप सिंह

श्री मुलायम सिंह यादव जी से मेरी पहली भेंट 1958 में हुई थी, जब मैं जैन इंटर कॉलेज में बतौर एक प्रवक्ता नियुक्त हुआ था। मैं जब पहले दिन 11वीं के विद्यार्थियों की क्लास लेने पहुँचा तो कक्षा में बहुत ज्यादा विद्यार्थी नहीं थे कक्षा में लगभग 17 से 18 विद्यार्थी ही कुल थे क्योंकि पहला दिन था तो उस दिन मैंने कक्षा के सभी विद्यार्थियों से उनका परिचय किया एवं स्वयं का भी उन्हें परिचय दिया।

शिक्षा की दृष्टि से ये बेहद जरूरी है कि विद्यार्थी एवं शिक्षक के बीच में एक मधुर सम्बन्ध का आदान प्रदान हो क्योंकि इससे विद्यार्थियों की शिक्षक से असहजता भी खत्म हो जाती है।

जब मैंने बच्चों की तरफ ध्यान से देखा तो मुझे मुलायम सिंह उन सभी विद्यार्थियों में सबसे अलग नज़र आए। उनकी पोशाक धोती-कुर्ता के साथ ही गाँधी टोपी थी।

जब परिचय का कार्यक्रम शुरू हुआ तब सबने अपने-अपने विषय में जानकारी दी लेकिन मुलायम सिंह के विषय में अधिक जानकारी देने लगे। उनके साथी रामरूप यादव ने मुझे विस्तार से बताया कि गुरूजी हम इन्हें एमएलए कह कर पुकारते हैं अन्य विद्यार्थी उन्हे नेताजी आदि नामों से पुकारा करते थे और क्योंकि मैं इनके साथ रहता हूँ और बड़ा हूँ इसलिए विद्यार्थी मुझे एमपी साहब कहते हैं।

नेताजी के नाम से सम्बोधित करने का कारण तब विद्यार्थियों ने बताया। घटना कुछ यूं थी कि ज़ब लोहिया जी ने किसानों के लिए सिंचाई से सम्बंधित मुद्दे पर जेल भरो आंदोलन का आह्वान किया तब कम उम्र में भी मुलायम सिंह ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया था जब मुलायम सिंह अपनी गिरफ़्तारी देने पहुँचे तब वहाँ अधिकारियों ने उन्हें नाबालिग होने के करण जेल नहीं भेजा और उन्हें छोड़ दिया गया फिर उन्होंने अधिकारियों से बात की और कहा कि अगर मेरी गिरफ़्तारी नहीं हो सकती है तो मेरे विरोध को देखते हुए इस आंदोलन में मेरा नाम तो आ सकता है? इसी घटना ने नेताजी का सम्बोधन दिया।

**समाज से बहिष्कार :-** एक बार मुलायम सिंह ने किसी जाटव लड़के के घर मित्रतावश भोजन ग्रहण कर लिया था जिसके चलते मुलयाम सिंह को उनके परिवार समेत समाज ने बहिष्कृत कर दिया। मुलायम सिंह और उनके परिवार ने इसकी तनिक भी परवाह नहीं की थी।

अगर बात करें उनके गाँव सैफई की तो उस गाँव में एक दूसरे का सहयोग करने की भावना प्रदेश के अन्य हिस्सों से बहुत अधिक थी और क्योंकि मुलायम सिंह की परवरिश उसी गाँव में हुई थी तो सहयोग करने की भावना उनमें बचपन से ही अपार थी इसलिए इन पर एक कहावत बिल्कुल सही बैठती है.. "होनहार बिरवान के होत चिकने पात" अर्थात् मुलायम सिंह में नेतागिरी के सभी गुण बचपन से ही विद्यमान थे वे दूसरों के दुखों को समझते थे उनकी मदद करते थे उनके सुख में भले न पहुँचें पर दुःख में एक परिवार के सदस्य की तरह ही उपस्थित रहते थे।

वे अपने विरोधियों के भी दुःख में शामिल होते थे उसी का परिणाम है आज उनके न रहने पर उनके विरोधी भी बड़ी संख्या में उनके गाँव घर सैफई जाकर उन्हें श्रद्धांजलि

अर्पित कर रहे हैं। किसी भी व्यक्ति के मन को मोह लेने की अद्भुत कला मुलायम सिंह में हमेशा से थी।

1960 में मुलायम सिंह 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर जैन इंटर कॉलेज करहल से चले गए और केके डिग्री कॉलेज इटावा से बीए उत्तीर्ण किया और ए.के. कॉलेज शिकोहाबाद से बी.टी. उत्तीर्ण कर के जैन इंटर कॉलेज में हमारे अध्यापक साथी बन गए।

**यादव महासभा के कार्यक्रम का सफल प्रबंधन :-** मुलायम सिंह के अंदर एक संगठात्मक क्षमता थी जो सर्वविदित थी। एक उदाहरण दे रहा हूँ जिससे आप इनकी क्षमता का आंकलन कर सकते हैं।

1966 में इटावा में एक अखिल भारतीय यादव महासभा की बैठक का आयोजन हुआ। रेवाड़ी के राजा राव वीरेंद्र सिंह उसके अध्यक्ष थे क्योंकि उस कार्यक्रम की व्यवस्था की जिम्मेदारी मुलायम सिंह पर थी। उन्हें स्वागत समिति का अध्यक्ष बना दिया गया था।

उस कार्यक्रम की इतनी बढ़िया व्यवस्था मुलायम सिंह ने की थी जिसके कारण वे अपने अंत समय तक अखिल भारतीय यादव महासभा से जुड़े रहे और सबके आदर का पात्र भी रहे क्योंकि उसी इटावा की सभा में काका कालेरकर की सिफारिशों को लागू करने का प्रस्ताव पास किया गया था।

**पहली बार विधायक बनने की कहानी :-** जसवंतनगर से विधायक नत्थू सिंह पहलवानी के बड़े प्रशंसक व्यक्ति थे एक दिन वे एक कुश्ती में बतौर अतिथि के रूप में पहुँचे जहाँ मुलायम सिंह का मुकाबला एक अपने से बड़े पहलवान से था। ये दंगल की फाइनल कुश्ती थी जिसे गांव में झंडे की कुश्ती कहा जाता है और उसकी बड़ी प्रतिष्ठा मानी जाती है। मुलायम सिंह ने न केवल वो कुश्ती जीती बल्कि अपने प्रतिद्वंद्वी और सारी जनता का ह्रदय भी जीत लिया जब उन्होंने उससे हाथ मिला कर गले लगा लिया। नत्थू सिंह इस घटना से बहुत प्रभावित हुए जिसमें उन्होंने मुलायम सिंह की शारीरिक शक्ति और ह्रदय का बड़प्पन दोनों को देखा। उस घटना के बाद 1967 के विधानसभा चुनाव के दौरान अपने चुनाव क्षेत्र जसवंतनगर से मुलायम सिंह का विधायक का टिकट पार्टी से दिलवा दिया और स्वयं करहल क्षेत्र से विधायकी का चुनाव लड़े। इस चुनाव में मुलायम सिंह के पास साधन के नाम पर केवल एक साइकिल थी जो बाद में उनकी पार्टी का चुनाव चिन्ह बनी।

**चौधरी चरण सिंह से संपर्क :-** यद्यपि

मुलायम सिंह उस चुनाव के बाद ज्यादा दिन विधायक नहीं रहे लेकिन उन्होंने चौधरी चरण सिंह का इस कदर भरोसा जीता कि चौधरी चरण सिंह ने सार्वजानिक घोषणाएं कर दीं कि मुलायम सिंह मेरे राजनीतिक उत्तराधिकारी हैं।

मुलायम सिंह में एक बड़ा गुण यह भी था कि वे आपकी किसी बात से सहमत नहीं होंगे तब वे उस बात पर अपनी असहमति तो करेंगे लेकिन अपने सम्बन्धों पर आंच नहीं आने देंगे।

**बसरेयर कांड :-** बसरेयर कांड में पुलिस ने एक दलित महिला और उसके पुत्र को किसी जुर्म में गिरफ्तार किया और उन पर अत्याचार किये। दोनों के कपड़े उतार कर एक कोठरी में बंद कर दिया। ये किसी माँ के अपमान की इंतहा थी इस घटना से जनता में आक्रोश फैल गया और विधायक होने के नाते मुलायम सिंह ने उस प्रदर्शन का नेतृत्व संभाला। एक बड़ी संख्या में अपने लोगों को इकठ्ठा कर के दोनों बेकसूरों को छुड़ाने के लिए थाने पर हमला कर दिया उस घटना में पुलिस ने भीड़ पर गोली चलाई कुछ लोग मारे गए और तमाम लोग घायल हुए जिनमें मुलायम सिंह भी थे। पुलिस ने उनके खिलाफ मुकदमा दायर कर जेल में डाल दिया। वे ढाई साल तक जेल में रहे। उस मुक़दमे में कोर्ट ने पुलिस के सारे अधिकारियों को दोषी करार दिया और दलित माँ बेटे पर अत्याचार की निंदा की और मुलायम सिंह को बाइज्जत बरी किया।

मुलायम सिंह का राजनैतिक कद इस घटना से बहुत ऊँचा हो गया और वे जनता का विश्वास जीतने में सफल रहे। हाईकोर्ट के इस फैसले के बाद भी मुलायम सिंह को जेल से रिहा नहीं किया गया क्योंकि तब तक आपातकाल की घोषणा हो चुकी थी और मुलायम सिंह को नत्थू सिंह के निकट होने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिया गया।

आपातकाल के बाद 1977 में आम चुनाव हुए। उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह विशाल बहुमत से जीत कर पुनः विधायक बने और चौधरी चरण सिंह के कृपापात्र मुलायम सिंह थे ही अतः राम नरेश यादव की सरकार में उनको सहकारिता जैसा महत्वपूर्ण मंत्रालय का कैबिनेट मंत्री बनाया गया।

## कुश्ती के मैदान में मुलायम सिंह की शारीरिक शक्ति और हृदय का बड़प्पन दोनों देखकर न सिर्फ राजनीतिक गुरू नत्थू सिंह प्रभावित हुए बल्कि जनता भी मुरीद हो गई

मुलायम सिंह ने उस भरोसे को जिससे उनको मंत्री बनाया गया था उसे कायम रखा और पहली बार उत्तर प्रदेश में सहकारी समितियों के चुनाव संपन्न कराए जिसकी तारीफ़ विपक्ष के नेता पूर्व सहकारिता मंत्री एनडी तिवारी ने सार्वजनिक रूप से की।

मंत्री बनने के बाद भी मुलायम सिंह की सहजता और जन साधारण से संपर्क रखने की प्रवृत्ति में कोई बदलाव नहीं आया। वे अपने विधानसभा क्षेत्र में अभी भी साइकिल से शादियों में आया जाया करते थे।

लोहिया जी का सिद्धांत था कांग्रेस हटाओ और देश बचाओ जबकि उनके निधन के बाद मुलायम सिंह ने यह कहना प्रारम्भ किया कि कांग्रेस और बीजेपी का मतदाता, धनदाता एक ही है इसलिए कांग्रेस को इतना कमजोर मत करना कि बीजेपी सत्ता में आ जाए जो एक सांप्रदायिक और समाजवाद विरोधी पार्टी है।

आपातकाल के बाद देश की राजनीति में एक बड़ा महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ क्योंकि आपातकाल के बाद जितने भी कांग्रेस से विमुख संगठन थे वे सब एक हो गए।

कुछ समय में ही इंदिरा गाँधी के निधन के बाद देश की सहानुभूति कांग्रेस के पक्ष में चली गई और फिर राजीव गाँधी जीत गए। इस चुनाव में जनता दल एवं सभी दलों का मिलाजुला संगठन चुनाव जीतने में असफल रहा। जनता दल से प्रधानमंत्री वीपी सिंह जी , चंद्रशेखर जी, गुजराल जी, देवगौड़ा जी , चौधरी चरण सिंह जी, मोरार जी देसाई इत्यादि नेता रहे लेकिन फिर भी जनता दल कमजोर हो गया।

इसके बाद बिखराव शुरू हो गया और उस बिखराव में सबसे ज्यादा नुकसान समाजवादी पार्टी का हुआ उस समय हिंदुस्तान के प्रत्येक हिस्से में गाँधी, लोहिया के समाजवादी समर्थक थे।

जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेंद्र देव, डॉ॰ राममनोहर लोहिया, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, यूसुफ मेहर अली, अच्युत पटवर्धन और अशोक मेहता आदि उल्लेखनीय नेताओं के समर्थकों ने मुलायम सिंह पर बिखरे समाजवादियों को एकत्रित करने का दबाव डाला जिसके फलस्वरूप 1992 में पूरे भारत के सभी उपेक्षित समाजवादी नेताओं को एकत्रित करके मुलायम सिंह ने समाजवादी पार्टी का गठन कर दिया और समाजवाद की नई परिभाषा

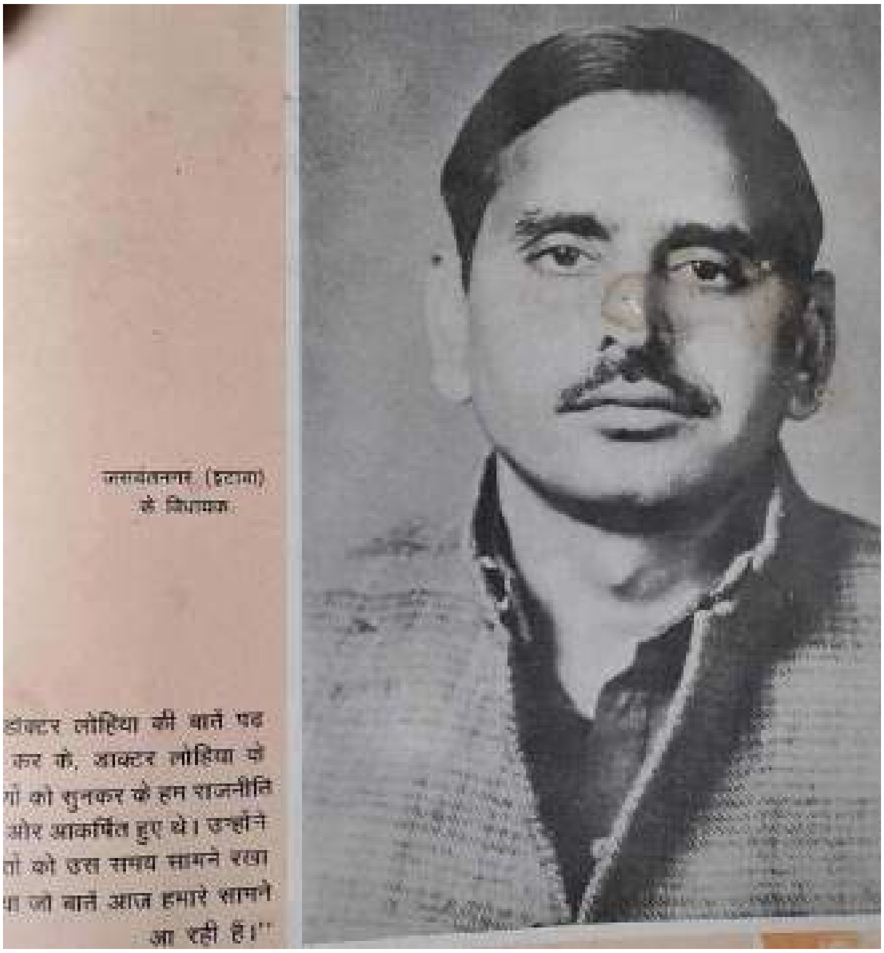


लिखी। जानते हैं समाजवाद क्या है?

**समाजवाद-** जैसे अंधेरे का इलाज उजाला है उसी प्रकार पूँजीवाद का और उससे जन्मी सामाजिक विषमता का एक मात्र इलाज समाजवाद है। जैसे एकतन्त्रवाद या साम्राज्यवाद का चोली दामन का साथ है, वे एक दूसरे के पूरक हैं, उसी प्रकार लोकतंत्र और समाजवाद का अंतरंग संबन्ध है। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व सम्भव नहीं है। रूस सबसे बड़ा समाजवादी देश था पर लोकतंत्र के अभाव में लौह यवनिका के चलते विघटित हो गया।

समाजवाद सार्वजनिक संस्थाओं को अधिकाधिक जिम्मेदारी के पक्ष में रहता है जनसुविधाओं की जिम्मेदारी निजी हाथों में देने से आर्थिक विषमता और बेरोज़गारी बढ़ने का कारण बन जाती है। समाजवाद सत्ता के विकेन्द्रीयकरण का समर्थक होता है जो सार्वजनिक संस्थाओं के पक्ष में इसलिए रहता है कि इससे आर्थिक लाभ की पूंजी सरकार के पास रहती है जो अंततोगत्वा जनहित में व्यय होता है। निजीकरण से अमीर गरीब की खाई और बेरोजगारी दोनों बढ़ती है।

पूंजी और सत्ता का तालमेल अलोकतांत्रिक और जनहित के विरुद्ध होता है और अगर इसमें धर्म का भी तालमेल हो तो लोकतंत्र के विपरीत स्थिति पैदा होती है यह एकतन्त्रवाद और सत्ता के केंद्रीकरण का कारक होता है।

आरएसएस और बीजेपी और उनकी सरकार की विचारधारा संविधान का शुरू से विरोध करती रही है । न वह सत्ता का विकेंद्रीयकरण के पक्ष में है न समाजवाद के। अपनी जातीय और धार्मिक श्रेष्ठता के सिद्धांत के चलते धर्मनिरपेक्षता की मनसा, वाचा, कर्मणा विरोधी है और भारत की मिलीजुली संस्कृति की दुश्मन है वैश्विक पूँजीवाद और साम्राज्यवाद में शब्दों का अंतर है।

इसीलिए समाजवादी विचारधारा और बीजेपी की सोच में 36 का विपरीत आंकड़ा है। जितना समाजवाद सामाजिक विद्रूपता, विसंगति, विषमता के विरुद्ध है उतनी ही यथास्थितिवादी यह सरकार है तो ये सोच मुलायम सिंह की रही है।

**मन मोहक व्यक्तित्व :-** मुलायम सिंह का सबसे अच्छा और हृदय को जीत लेने वाला फैसला तब हुआ जब पहली बार समाजवादी पार्टी ने चुनाव लड़ा किन्तु मुलायम सिंह ने चंद्रशेखर के मुकाबले में अपना कोई भी प्रत्याशी नहीं उतारा उसके बाद चुनावी माहौल में चंद्रशेखर के लिए उनके प्रचार में जाकर उनके लिए वोट भी माँगा। ये बड़प्पन सिर्फ मुलायम सिंह में था और इसी लोकतांत्रिक प्रवृत्ति की सराहना उनके विरोधी भी हमेशा से करते थे।

मुलायम सिंह कांग्रेस के खिलाफ थे उसके बाद भी उन्होंने रायबरेली और अमेठी में सोनिया जी के खिलाफ कभी अपना कोई प्रत्याशी नहीं उतारा था क्योंकि ये लोकतान्त्रिक परंपरा को मानते थे जिससे लोकतंत्र में सभी पार्टियां मज़बूत रहें यह गुण जो उनमें था ये बहुत कम नेताओं में होता है। विरोध में भी सहमत और सहमत में भी असहमत ये गुण उनमें हमेश से विद्यमान था।

मुलायम सिंह ने बैकवर्ड एवं अल्पसंख्यकों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए एवं उनके हक़ और अधिकारों के लिए पूरी ताकत से काम किया इस कारण उनपर अन्य विपक्षी दल एवं नेता उंगलियां भी उठाते रहे हैं।

एक बार एक पत्रकार ने मुलायम सिंह से

पूछा कि आप यादवों एवं मुस्लिमों के लिए ज्यादा काम करते हैं जबकि अन्य धर्म, जाति के लोगो की चिंता नहीं करते हैं क्यों?

जवाब में मुलायम सिंह ने कहा कि जनेश्वर मिश्र, मोहन सिंह, बद्री विशाल पित्ती, वृजभूषण तिवारी, रेवती रमण सिंह, भगवती सिंह, बेनी प्रसाद वर्मा, कपिल देव सिंह (राष्ट्रीय महासचिव ) इत्यादि नाम गिनाकर उन्होंने कहा आप बताओ मेरी पार्टी में इन सब नेताओं के कद का क्या कोई दूसरा यादव या बैकवर्ड नेता है?

मुलायम सिंह पर एक और आरोप हमेशा से लगाया जाता रहा है कि वे अपराधियों को संरक्षण देते हैं जिसमें मीडिया ने सवाल करते हुए पहला नाम फूलन देवी का लिया उस सवाल का जवाब देते हुए मुलायम सिंह ने कहा कि हम लोहिया जी को मनाने वाले लोग हैं और लोहिया जी हमेशा कहा करते थे कि "भारतीय नारी द्रौपदी जैसी हो जिसने कि कभी भी किसी पुरुष से दिमागी हार नहीं खाई" और एक और बात कही थी कि "इस देश की औरतों के लिए आदर्श सावित्री नहीं, द्रौपदी होनी चाहिए" तो हम लोहिया जी को मानने वाले लोग हैं और फूलन देवी, जिनके साथ घोर अन्याय हुआ था उनको मैंने मुख्यधारा से जोड़ा और उन्हें सांसद बनाया उन्हें समाज में सिर उठा कर जीने का अधिकार देने के लिए ही मेरा ये कदम था।

जब मीडिया को ये जवाब मिला तो उन्होंने आगे पुनः सवाल करते हुए कहा कि इनके अलावा भी बहुत से अपराधियों का साथ आप देते हैं तब मुलायम सिंह ने कहा कि जनेश्वर मिश्र, मोहन सिंह, उदय प्रताप सिंह, चौधरी हरि मोहन सिंह इत्यादि नेता पार्टी में हैं, आप बता दीजिये अगर उनपर एक भी मुक़दमे हों और इन सभी के कद का कोई एक नेता बताओ जिस पर आपराधिक मुक़दमे दर्ज हों? तो इससे आप उनके कौशल को समझ सकते हैं।

वे उत्तर देने में बिल्कुल झिझकते नहीं थे और कोई कैसा भी सवाल उनसे कर ले उससे वे कभी चिढ़ते नहीं थे और न उसके लिए मन में कोई खटास रखते थे वे कह देते थे कि अब आपके पास जानकारी कम है तो हम क्या कर सकते हैं जो सच था मैंने आप को बता दिया और जानकारी देकर आपके ज्ञान में वृद्धि की है। ऐसी बातें चलते चलते बोलते थे जिसमें माहौल खुशनुमा हो जाता था और किसी को बुरा भी नहीं लगता था।

समाजवादी पार्टी बनने के बाद एक समय ऐसी स्थिति आ गई थी कि जल्दी ही समाजवादी पार्टी राष्ट्रीय पार्टी बनने जा रही है जब उत्तर प्रदेश में लोकसभा के चुनाव संपन्न हुए जिसमें उस समय समाजवादी पार्टी ने 39 सीटें जीतीं इसके साथ ही, 8 मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, कर्नाटक, महाराष्ट्र राज्यों में भी पार्टी के सदस्य जीत कर आए।

**अयोध्या विवाद का सच :-** उसके बाद अयोध्या विवाद जैसे मामले से मुलायम सिंह को काफी नुकसान हुआ पर इस घटना की सच्चाई आज मैं बताता हूँ। पूरी घटना के विषय में मुझे लगता है सभी सत्य नहीं जानते हैं। अयोध्या में हुआ गोली कांड दुखदाई जरूर था। उसका दुःख सबको है। यूपी सरकार को सुप्रीम कोर्ट का आदेश था कि किसी को भी उस विवादित ढांचे को नुकसान करने न दिया जाए और अयोध्या में यथास्थिति बनाए रखी जाए।

राज्यपाल श्री मोहम्मद उस्मान आरिफ से मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते हुए (1989)

इसीलिए यूपी सरकार के निर्देश यूपी पुलिस को थे कि वहाँ पर किसी को जाने न दिया जाए पर जब बड़ी संख्या में लोगों ने वहाँ अफरातफरी जैसा माहौल बना दिया और जबरदस्ती अंदर घुसने लगे, पुलिस वालों के संग हाथपाई पर उतर आए तब पुलिस यथास्थिति बनाने के लिए और सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन करते हुए ही गोली चलाई जिसमें 17 लोगों की जान गई थी लेकिन बीजेपी ने इसको बढ़ा चढ़ाकर बहुत झूठा प्रचार किया।

इस घटना से कुछ दिन पूर्व मुलायम सिंह ने कुछ साधुओं को गिरफ्तार कर लिया था। उन्हें छोड़ने के लिए वीपी सिंह ने उप गृहमंत्री राम लाल राही को लखनऊ भेजा। यदि मुलायम सिंह उन्हें छोड़ दें तो साधुओं से बातचीत के माध्यम से अयोध्या समस्या का हल निकाल लें लेकिन मुलायम सिंह ने उनकी कोई बात नहीं मानी।

उसके बाद में वीपी सिंह ने मुझे संतोष भारतीय (सांसद ) के माध्यम से बुलवाया और मुलायम सिंह से उन साधुओं को छोड़ने के लिए मुझे लखनऊ भेजा।

मैं गया और मुलायम सिंह से सारा घटनाक्रम बताया तो मुलायम सिंह ने हमसे कहा कि वे साधु अगर मैंने छोड़ दिये तो वो सब अंडरग्राउंड हो जायेंगे और मेरे लिए समस्या खड़ी कर देंगे लेकिन जब मैंने उनसे बातचीत की और कहा कि आप प्रधानमंत्री की बात मानिये वर्ना इतिहास में लिखा जाएगा कि मुलायम सिंह के हठ के कारण बातचीत का रास्ता नहीं खुल पाया। कुछ देर के बाद उन्होंने मेरी बात मान ली और साधुओं को छोड़ दिया और इस बात की सूचना टेलीफोन पर प्रधानमंत्री जी को स्वयं दे दी लेकिन मुलायम सिंह का अंदेशा सही निकला, सब साधु अंडरग्राउंड हो गए और गोलीकांड की भूमिका तैयार कर दी।

समाजवाद का मानना है कि धर्म को राजनीति से दूर रखना चाहिए और ये बात सिर्फ मुलायम सिंह ही नहीं लोहिया जी, गाँधी जी स्वयं कहा करते थे।

## जब पहली बार समाजवादी पार्टी ने चुनाव लड़ा किन्तु चंद्रशेखर के मुकाबले में मुलायम सिंह ने अपना प्रत्याशी नहीं उतारा। चंद्रशेखर के लिए प्रचार में जाकर उनके लिए वोट भी माँगा। ये बड़प्पन सिर्फ मुलायम सिंह में था

**हिंदी भाषा के ध्वजवाहक :-** मुलायम सिंह का हिंदी भाषा को लेकर मत बिल्कुल स्पष्ट था। वे हमेशा से हिंदी के पक्षधर रहे हैं। मैं अपना व्यक्तिगत अनुभव आप को बताता हूँ जब मैं पहली बार 1989 में मैनपुरी से सांसद बना तो लोकसभा जाने से पहले मुलायम सिंह ने मुझसे कहा कि गुरूजी आप वहाँ सदन में इंग्लिश में अपनी बात मत कहियेगा वहाँ भी आप को उसी भाषा का प्रयोग करना है जिस भाषा में आपने जनता से वोट मांगे हैं। जब आप हिंदी में बात करेंगे तब आपकी बात को पूरा सदन और देश की जनता अच्छे से समझ पाएगी। अंग्रेजी का प्रयोग आप तभी करियेगा जब कोई हिंदी जानने वाला न हो और वह आपसे कहे कि मुझे इसका मतलब इंग्लिश में बता दीजिये तभी आप इंग्लिश का प्रयोग करियेगा अन्यथा हिंदी का ही प्रयोग आपसे अपेक्षित है। मैंने उनकी बात पर अपनी सहमति दी और जब तक मैं सदन में रहा हिंदी का ही प्रयोग करता रहा।

**अब्दुल कलाम साहब :-** एक वाकया और है। स्मृति शेष अब्दुल कलाम साहब का उन से मेरी पहली भेंट तत्कालीन रक्षा मंत्री (चिरस्मरणीय) मुलायम सिंह के कार्यालय के प्रतीक्षालय में हुई थी जहाँ हम दोनों अंदर से बुलावे की प्रतीक्षा में बैठे थे। सूचना पहुँचते ही मुलायम सिंह स्वयं बाहर निकले और हम दोनों को स्नेहपूर्ण ढंग से अन्दर लेकर गए। मैं एक तरफ़ बैठकर, उन दोनों की रक्षा मन्त्रालय सम्बन्धित बातें सुन रहा था। कुछ देर बाद मुलायम सिंह ने बड़े सम्मानपूर्वक उनका परिचय मुझसे कराया और कहा कि यह देश के गौरव विख्यात वैज्ञानिक श्री अब्दुल कलाम साहब हैं। मेरा भी परिचय उन्हें देते हुए बताया कि इस समय यह राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य, हिन्दी के बड़े कवि हैं और हँसते हुए कहा मुझे इन्टर क्लास में इंग्लिश भी पढ़ाई है। फिर मुलायम सिंह कलाम साहब की तरफ़ मुखातिब हुए, कलाम साहब आप हिन्दी खूब समझते हैं बोल भी सकते हैं। सरकारी कामकाज आप बेशक अँग्रेजी में करें क्योंकि आपका तकनीक का मामला है पर आपसे मेरा एक निवेदन है कि आप अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करें तो मुझे बड़ी

प्रसन्नता होगी।

कलाम साहब उस समय मुस्कुराते हुए विदा लेकर चले गए। बात आई गई हो गई। कुछेक सालों बाद जब एक बार आदरणीय कलाम साहब सैफई पधारे तो उन्होंने अपने भाषण में कबूल किया कि मुझे हिन्दी सीखने की प्रेरणा मुलायम सिंह ने दी।

मुलायम सिंह इंग्लिश के खिलाफ नहीं थे पर वे सरकारी नौकरी में उसकी अनिवार्यता जरूर हटाना चाहते थे। एक बार पीसीएस से उन्होंने अंग्रेजी की अनिवार्यता हटा दी उसके बाद जब पीसीएस की परीक्षा हुई तब उसमें सबसे ज्यादा चयन ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों का हुआ। मुलायम सिंह का मानना था कि कोई भी बच्चा किसी भी चीज को अपनी भाषा में जल्दी समझता है बजाये किसी और भाषा के इसीलिए मुलायम सिंह सिर्फ हिंदी ही नहीं भारत के अलग अलग प्रांतो में बोली जाने वाली भाषा को भी उस क्षेत्र में अधिक तरजीह देने की बात कहा करते थे।

उसके कुछ समय बाद ही सूचना प्रौद्योगिकी का विस्फोट हो गया जिसमें मोबाइल, कम्प्यूटर, टैबलेट, टीवी, इंटरनेट इत्यादि इन सब के आने से भाषा कोई भाषा नहीं रही इनके आने पर मैंने एक बयान दिया था कि " हिंदी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है लेकिन हिंदी का स्वरूप बदल जाएगा" तो इन सब की बात अलग है पर जितना इंग्लिश का विरोध और हिंदी भाषा का पक्ष मुलायम सिंह ने लिया किसी अन्य नेता ने नहीं लिया।

वक़्त बदलता है और वक़्त के हिसाब से जितनी भी देश की जीवित पार्टियां हैं वे अपनी विचारधारा भी बदल लेती हैं। एक समय था जब हम सब विरोध कर रहे थे कि सत्ता परिवर्तित हो कांग्रेस हटे पर अब आज हमारा मुद्दा है कि बीजेपी हटाओ भले कांग्रेस से समझौता करना पड़े। देश की गंगा जमुनी तहजीब का जितना नुकसान बीजेपी ने किया है उतना इतिहास में किसी भी पार्टी ने नहीं किया है। इस गंगा जमुनी तहजीब की अगर देश के किसी नेता ने सबसे ज्यादा रक्षा की है तो वो मुलायम सिंह हैं।

आज उनके न रहने पर इसी व्यक्तित्व के कारण ही देश में बच्चों से लेकर बुजुर्गों एवं पक्ष से लेकर विपक्ष एवं साथी से लेकर विरोधी तक दुःखी हैं। मुलायम सिंह की लोकप्रियता का जो सबसे बड़ा कारण था वो उनका जनता से जुड़ाव था।

**साहित्यकारों का सम्मान :-** एक घटना और मैं बताता हूँ। बृजेन्द्र अवस्थी और उर्मिलेश

जी साहित्यकार थे उनके गुज़र जाने की खबर जब मैंने मुलायम सिंह को दी तो मुलायम सिंह ने उनका अंतिम संस्कार राज्य सम्मान के साथ करवाया। ये जानते हुए भी कि वो बीजेपी के प्रसंशक थे दोनों ही साहित्यकार मेरे अंतरंग थे।

मुलायम सिंह ने सभी को सम्मान दिया चाहे वह कलाकार, साहित्यकार, कवि, कुश्ती, समाजसेवा, मीडिया, खिलाड़ी, नृत्यकार, बिरहा गायक हो या राजनीति आदि क्षेत्रों में काम कर रहा हो। इन लोगों को यश भारती जैसा सम्मान दे कर उनके सम्मान को बढ़ाया।

मुलायम सिंह एक और बात कहा करते थे कि वे लोक कलाओं को बढ़ावा देंगे इसके साथ ही गांव के खेलों में भी खोखो, कबड्डी, कुश्ती इत्यादि खेलों को अधिक महत्व देंगे जबकि क्रिकेट को कम देंगे। मुलायम सिंह का फ़िल्मी गानों से कोई सम्बन्ध नहीं था जबकि वे लोक गीतों को बहुत पंसद करते थे।

इतिहास की इकलौती ऐसी सरकार मुलायम सिंह की थी जिसमें 6 साहित्यकारों को मंत्री का दर्जा प्राप्त था जिसमें नीरज जी, सोम ठाकुर, कैलाश गौतम , उदय प्रताप सिंह, सरिता शर्मा, सुनील जोगी आदि थे जिनका सम्मान बढ़ाया था। कलाकारों के जीवन को सुंदरता और सरलता प्रदान करने के लिए यशभारती सम्मान भी दिया।

**मुलायम सिंह /आडवाणी जी :-** जब मुलायम सिंह बोलने पर उतर आते थे तो बिल्कुल साफ बात करने में हिचकिचाते नहीं थे। मैं संसद भवन के सेन्ट्रल हॉल में बैठा हुआ था मुलायम सिंह लखनऊ से सीधे आए थे। संयोगवश आडवाणी जी भी उस समय सेन्ट्रल हॉल में मौजूद थे।

आडवाणी जी कि रथयात्रा समाप्त हो चुकी थी। मुलायम सिंह ने आते ही आडवाणी जी से सादर नमस्कार किया उसी समय अडवाणी जी ने चुटकी ली "अब हम गिरफ्तार होने को तैयार हैं इस बात के जवाब में मुलायम सिंह ने हँस कर कहा कि आप फिर से कोई वैसा काम करेंगे तब हम आपको जरूर गिरफ्तार करेंगे इस बात के होते ही दोनों लोग हँसने लगे पर मैं जो बात कह रहा हूँ कि आडवाणी जी से ये बात कहना अपने आप में बड़ी  बात है क्योंकि आडवाणी जी भी देश के बड़े नेताओं में से एक हैं।

**अटल जी :-** ऐसे ही मुलायम सिंह की अटल जी से बहुत निकटता थी। सदन में एक बार मुलायम सिंह ने कहा उस समय मैं भी दर्शकों में उपस्थित था कि अगर आप पर आरएसएस का मुखौटा नहीं होता तो मैं आपको अपनी पार्टी का अध्यक्ष बना लेता हम आपकी योग्यता की इतनी इज्जत करते हैं।

***मुलायम सिंह जैसे नेता सदियों में कहीं जन्म लेते हैं। मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।***

फोटो स्रोत : गूगल

22 नवंबर 1939 - 10 अक्टूबर 2022

# नेताजी अमर रहें

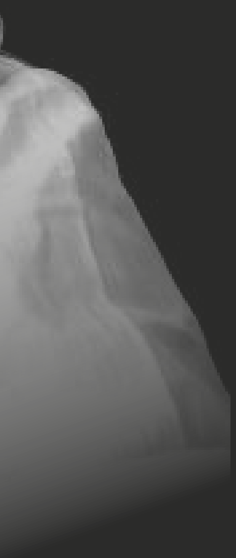

दुष्यंत कबीर

भारत में पिछड़ों और वंचितों के सबसे सशक्त व्यक्तित्व नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव नहीं रहे। भारतीय राजनीति में यह एक युग का अवसान है।

समाजवादी आंदोलन को मजबूत करने के लिए आजीवन संघर्ष करते रहने वाले नेता जी का निधन भारतीय राजनीति के लिए भारी क्षति है। नेताजी को भावपूर्ण नमन एवं श्रद्धांजलि।

बल्कि एक संपूर्ण विचार थे। एक ऐसा विचार जिसने लंबे समय तक न सिर्फ उत्तर प्रदेश बल्कि भारत की राजनीति में अपना अहम योगदान किया है। करीब तीन दशक पहले समाजवादी पार्टी का गठन करने के बाद उन्होंने पार्टी को उन ऊंचाइयों तक पहुंचाया जहां उनकी एक शानदार विरासत पार्टी को निरंतर आगे ले जाने के लिए कृत संकल्प है।

नेताजी मुलायम सिंह यादव का जन्म 22 नवंबर 1939 को इटावा जिले के सैफई गांव में मूर्ति देवी व सुघर सिंह यादव के किसान परिवार में हुआ।

श्रद्धेय नेताजी

श्रद्धेय नेता
22 नवंबर 1939 - 10 अक्टूबर

वे अपने पांच भाई-बहनों में रतन सिंह यादव से छोटे व अभयराम सिंह यादव, शिवपाल सिंह यादव, राजपाल सिंह और कमला देवी से बड़े थे। राजनीति में आने से पूर्व श्री मुलायम सिंह यादव आगरा विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर और बी टी करने के बाद इन्टर कालेज में प्रवक्ता नियुक्त हुए।

प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के बाद डॉ. राम मनोहर लोहिया ने संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी बना ली थी। श्री मुलायम सिंह यादव उस पार्टी के सक्रिय सदस्य बन चुके थे। वे क्षेत्र के गरीबों, किसानों की बात करते और उनकी आवाज उठाते। वे सियासत, पढ़ाई और कुश्ती के अपने तीनों शौक में बराबर समय दे रहे थे। जसवंतनगर में एक कुश्ती के दंगल में युवा मुलायम सिंह पर विधायक नत्थू सिंह की नजर पड़ी। उन्होंने देखा कि मुलायम ने एक पहलवान को पल भर में चित कर दिया। नत्थू उनके मुरीद हो गये और अपना शागिर्द बना लिया।

समय अपनी रफ्तार से चलता रहा। इस बीच वह साल आ गया जब मुलायम सिंह यादव के नेताजी बनने की कहानी शुरू हुई।

वर्ष 1967 का विधानसभा चुनाव हो रहा था। मुलायम के राजनीतिक गुरू नत्थू सिंह तब जसवंतनगर के विधायक थे। उन्होंने अपनी सीट से मुलायम सिंह को मैदान में उतारने का फैसला लिया। डा. लोहिया से पैरवी की और उनके नाम पर मुहर लग गयी। अब मुलायम सिंह जसवंतनगर विधानसभा सीट से सोशलिस्ट पार्टी के उम्मीदवार थे। नाम की घोषणा होते ही मुलायम सिंह चुनाव प्रचार में जुट गये। तब उनके पास प्रचार के लिए कोई संसाधन नहीं था। ऐसे में वे साइकिल चलाते और गांव-

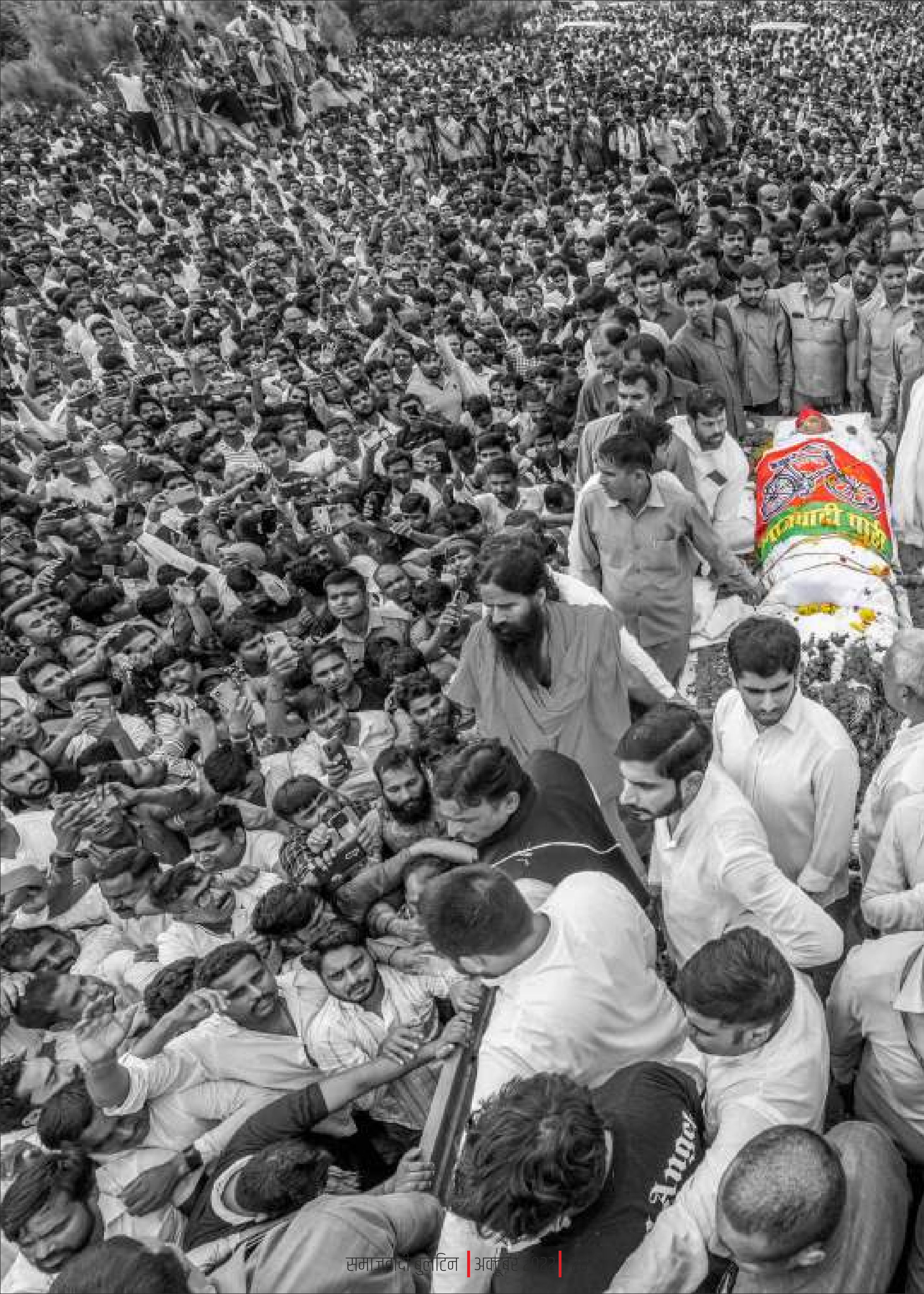

समाजवादी पार्टी

गांव जाते। उनके पास चुनाव लडने के लिए पैसे नहीं थे। ऐसे में उन्होंने लोगों से मिलकर एक वोट, एक नोट का नारा दिया। वे चंदे में एक रुपया मांगते और उसे ब्याज सहित लौटाने का वादा करते।

इस बीच चुनाव प्रचार के लिए एक पुरानी अंबेस्डर कार खरीदी गई। गाड़ी तो आ गयी लेकिन उसके लिए ईंधन यानी तेल की व्यवस्था कैसे हो, तब लोगों ने फैसला लिया कि हम हफ्ते में एक दिन एक वक्त शाम को खाना खाएंगे। उससे जो अनाज बचेगा,उसे बेचकर अंबेस्डर में तेल भराएंगे। इस तरह कार के लिए पेट्रोल का इंतजाम हुआ। लोगों के समर्थन से सियासत के अखाड़े की पहली लड़ाई मुलायम सिंह जीत गये और सिर्फ 28 साल की उम्र में प्रदेश के सबसे कम उम्र के विधायक बने, और यहां से शुरू हुआ उनके नेताजी बनने का सफर।

1967 में वे पहली बार विधायक बने और 1977 में प्रदेश में सहकारिता एवं पशुपालन मंत्री बने। वे 5 दिसंबर 1989 को पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। वे तीन बार मुख्यमंत्री रहे। वे देश के रक्षा मंत्री भी रहे। रक्षा मंत्री रहते हुए उन्होंने ऐसा निर्णय लिया इसे आज भी भारतीय सेना और उनके परिजन याद रखते हैं। दरअसल नेताजी ने यह निर्णय लिया कि शहीद होने वाले जवानों के पार्थिव शरीर को पूरे सम्मान के साथ उनके पैतृक स्थान तक पहुंचाया जाएगा जिसकी व्यवस्था भारतीय सेना करेगी। आज नेताजी भले ही हम सबके बीच न हों लेकिन उनके इस निर्णय को याद किया जाता रहेगा।

तीन बार 5 दिसंबर 1989 से 24 जनवरी 1991 तक, 5 दिसम्बर 1993 से 3 जून 1996 तक और 29 अगस्त 2003 से 11

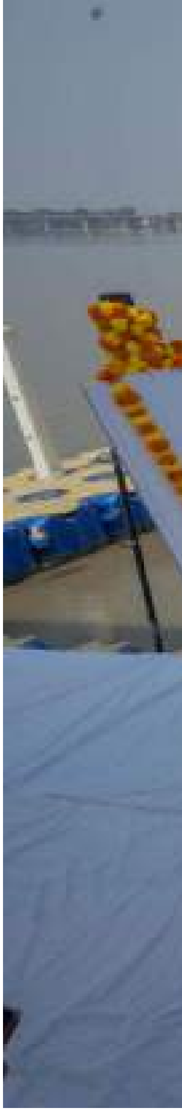

जल पुलिस
श्रद्धेय नेताजी

श्रद्धेय नेताजी
श्रद्धांजलि

श्रद्धेय नेताजी

मई 2007 तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में अपने इन कार्यकाल में नेताजी ने सामाजिक न्याय और समतामूलक समाज की स्थापना करने के लिए दर्जनों फैसले लिए। नेताजी ने उत्तर प्रदेश में पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक एवं दलित समाज के सामाजिक स्तर को ऊपर करने के लिए विशेषकर महत्वपूर्ण कार्य किया। जाति और धर्म का भेद न करने वाले नेताजी ने सामाजिक न्याय स्थापित करने के साथ ही उत्तर प्रदेश के विकास को भी तेज गति से निरंतर आगे बढ़ाया।

***नेताजी अमर रहें!***

# समाजवाद के लिए समर्पित नेताजी

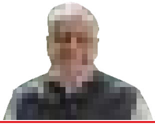

राजेन्द्र चौधरी

पूर्व कैबिनेट मंत्री, उप्र सरकार

श्रद्धेय श्री मुलायम सिंह यादव जी का हमारा साथ बहुत लम्बे समय तक रहा। किसानों-गरीबों को लेकर वे हमेशा संवेदनशील रहे। गांव-किसान और खेती को लेकर उन पर चौधरी चरण सिंह जी के विचारों की गहरी छाप थी। श्री मुलायम सिंह यादव का संघर्ष और किसानों, गरीबों के प्रति समर्पण भाव देख कर चौधरी साहब नेता जी पर भरोसा करते थे।

5 दिसम्बर 1989 से 24 जनवरी 1991 तक, 5 दिसम्बर 1993 से 3 जून 1995 तक और 29 अगस्त 2003 से 13 मई 2007 तक उत्तर प्रदेश के तीन बार मुख्यमंत्री रहे। इसके अतिरिक्त वे केन्द्र सरकार में रक्षा मंत्री भी रह चुके हैं। उत्तर प्रदेश में सामाजिक सद्भाव को बनाए रखने में श्री मुलायम सिंह ने साहसिक योगदान किया। श्री मुलायम सिंह यादव की पहचान एक धर्मनिरपेक्ष नेता की रही है। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी सबसे बड़ी पार्टी है।

राजनीति की दुनिया में श्री मुलायम सिंह यादव को सम्मान से नेताजी कहा जाता है। लोकतंत्र, संविधान और धर्मनिरपेक्षता के प्रति श्री मुलायम सिंह यादव की निष्ठा अटूट थी। तमाम बाधाएं आईं लेकिन वे कभी मुलायम सिंह यादव को अपने सामाजिक न्याय, धर्मनिरपेक्षता और लोकतांत्रिक मार्ग से विचलित नहीं कर पाईं।

हम लोगों ने एक साथ 45 वर्षों से अधिक समय तक समाजवादी विचारों और चौधरी चरण सिंह द्वारा बताए रास्ते पर चलते हुए किसानों-गरीबों के लिए संघर्ष किया।

नेताजी लोक दल और फिर समाजवादी पार्टी की मजबूती के लिए अनवरत काम करते रहे। जब चौधरी चरण सिंह जी ने नेताजी को 1980 में लोक दल उत्तर प्रदेश का प्रदेश अध्यक्ष बनाया तो चौधरी साहब ने मुझे भी प्रदेश महामंत्री की जिम्मेदारी दी थी।

आपातकाल में नेताजी ने जेल की यातना सही। वे इटावा जेल में रहे। आपातकाल में मेरठ जेल से रिहाई के बाद मैं गाजियाबाद से 1977 में विधायक निर्वाचित हुआ था। नेताजी जनता पार्टी की सरकार में सहकारिता मंत्री बने। श्री मुलायम सिंह यादव ने अपने प्रथम मंत्रित्वकाल में सहकारिता को नया लोक कल्याणकारी स्वरूप दिया। 1977 में सत्तारूढ़ जनता पार्टी के युवा संगठन "युवा जनता" उत्तर प्रदेश का प्रदेश अध्यक्ष रहते हुए मुझे नेताजी दिशा निर्देश देते थे।

उसके बाद से उनके अंतिम समय तक हमने एक विचारधारा और एक लक्ष्य के लिए काम किया। अब उस विचारधारा की मशाल श्री अखिलेश यादव जी के हाथों में है। वे मजबूती के साथ समाजवादी आंदोलन को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

1980 के बाद से नेताजी के साथ संगठन में हरस्तर पर सहयोगी रहकर हमने समाजवादी आंदोलन को आगे बढ़ाने की दिशा में काम किया। 1987 में क्रान्ति रथ लेकर जब श्री मुलायम सिंह यादव निकले तो मैंने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में उनकी कई सभाएं कराने की जिम्मेदारी निभाई। उनकी मेहनत और संघर्ष से किसानों, गरीबों, पिछड़ों, दलितों, अल्पसंख्यकों में भरोसा जागा। कांग्रेस की यथास्थितिवाद के खिलाफ श्री मुलायम सिंह यादव एक विकल्प बनकर उभरे। 1989 के आम विधानसभा चुनाव में पहले क्रांति रथ यात्रा से पूरे प्रदेश में परिवर्तन की जमीन तैयार हुई। मैं उन तमाम राजनीतिक घटनाओं में सहयोगी और साक्षी रहा।

नेताजी दृढ़ निश्चयी, मेहनती और बेहद लोकतांत्रिक थे। इरादों के पक्के थे। उनके फैसलों में राष्ट्रहित और सामाजिक एकता सर्वोपरि रहती थी। वे नफा-नुकसान से परे रहकर फैसले लेते थे। डॉ0 राम मनोहर लोहिया और डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, चौधरी चरण सिंह और जयप्रकाश नारायण के विचारों के वे सच्चे अनुयायी थे। जीवनभर उन्हीं के विचारों पर चलते रहे। जाति-धर्म और भेदभाव से दूर नेताजी हर जाति, धर्म, वर्ग को साथ लेकर चले और सबका साथ दिया।

वे गरीबों, किसानों, वंचितों, शोषितों के उत्थान को लेकर हमेशा चिंतित रहते थे। हर वर्ग की राजनीतिक भागीदारी के वे प्रबल पक्षधर रहे। श्री मुलायम सिंह यादव ने प्रदेश में पहली बार दलितों को सत्ता में भागीदारी देने की पहल की थी। यद्यपि उस दिशा में बात आगे नहीं बढ़ सकी। जहां तक सांप्रदायिक शक्तियों से लड़ने की बात है तो श्री मुलायम सिंह यादव से बड़ा कोई और योद्धा नहीं रहा। अगड़ों, पिछड़ों को साथ लेकर दलितों और अल्पसंख्यकों को जोड़कर उन्होंने उत्तर प्रदेश की राजनीति को बदल दिया था।

सन् 2012 में समाजवादी पार्टी को उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत मिला। यह पहली बार हुआ था कि उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी अपने बूते सरकार बनाने की स्थिति में थी। नेताजी के सुपुत्र और समाजवादी पार्टी के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने बसपा की सरकार के खिलाफ साइकिल यात्राएं की और भ्रष्टाचार का मुद्दा जोरशोर से उठाया। प्रदेश के सामने उन्होंने विकास का एजेंडा रखा। श्री अखिलेश यादव के विकास के वायदों से प्रभावित होकर पूरे प्रदेश में उनको व्यापक जनसमर्थन मिला। चुनाव के बाद नेतृत्व का सवाल उठा तो नेताजी ने वरिष्ठ साथियों से विमर्श के बाद श्री अखिलेश यादव को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी दी। श्री अखिलेश यादव ने नेताजी के बताए रास्ते पर चलते हुए उत्तर प्रदेश को विकास के पथ पर आगे बढ़ाया है।

यही वजह है कि आज समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश में तो बड़ी ताकत है ही, उत्तर प्रदेश के बाहर कई राज्यों में भी समाजवादी पार्टी को लोकप्रियता मिल रही है। सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में नेताजी का बहुमूल्य योगदान है। श्री मुलायम सिंह यादव जी के निधन से समाजवादी आंदोलन की निश्चय ही बड़ी क्षति हुई है। ऐसी स्थिति में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव पर समाजवादी विचारधारा को आगे दूर तक ले जाने की जिम्मेदारी है।

जिस तरह श्री अखिलेश यादव जी डटे हैं, विश्वास है कि समाजवादी विचारधारा उनकी अगुवाई में निरंतर मजबूत होते हुए ऊंचाइयों के शिखर पर पहुंचेगी। हम सब समाजवादी साथियों की जिम्मेदारी है कि वे नेताजी के बताए रास्ते पर चलते हुए श्री अखिलेश यादव को संबल दें, उनके हाथ जितने ही मजबूत होंगे, समाजवाद में भी उतनी ही धार आएगी।

श्रद्धेय नेताजी के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

# बड़ी विरासत के स्तंभ

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

मुलायम सिंह यादव की पार्थिव देह भले अग्नि को समर्पित हो गई लेकिन सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्षता के लिए उनका संघर्ष कभी नष्ट नहीं होने वाला है। भारत का इतिहास जब तक रहेगा और इस दुनिया में नफरत की ताकतों से लड़ने वाले जब तक रहेंगे तब तक मुलायम सिंह का नाम अमर रहेगा। उनका साहस और संघर्ष का जज़्बा और तमाम विरोधी ताकतों के साधने की क्षमता सभी को समझ में आती थी। सभी उसके कायल थे।

मुलायम सिंह जो लड़ाई लड़े और जिस लड़ाई को आगे लेकर जाना है वह अभी खत्म नहीं हुई है। लोकतांत्रिक राजनीति में सत्ता पाने की जरूरत होती है लेकिन उनका कुल संघर्ष सत्ता पाने तक ही सीमित नहीं था। जो लोग यह सोचते हैं कि दिल्ली और उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की दोबारा सरकार से मुलायम सिंह अप्रासंगिक हो गए हैं वे भूल कर रहे हैं। न तो देश में सबका साथ सबका विकास हुआ है और न ही उत्तर प्रदेश में रामराज्य आया है। यह असत्य और घृणा के आधार पर निर्मित बहुसंख्यक वोट बैंक के आधार पर

हासिल की गई सत्ता है जिसके पाये इतने टिकाऊ नहीं हैं जितना दावा हो रहा है।

आने वाले समय में जब भी इन ताकतों के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई लड़ी जाएगी उस समय मुलायम सिंह एक प्रेरणा की तरह से खड़े रहेंगे। यही वजह है कि महज तीन बार अधूरे कार्यकाल के लिए मुख्यमंत्री और एक बार देश के रक्षा मंत्री रहने वाले मुलायम सिंह को इस तरह से पेश किया जाता है जैसे वे सत्ता पर स्थायी रूप से विराजमान थे और उसके साधनों का दुरुपयोग करते रहे।

इसकी वजह वे शक्तियां हैं जिनसे उनका मुकाबला था। उनका मुकाबला उन जातिवादी ताकतों से था जो अनुदार, कट्टर और सांप्रदायिक हैं। यह वही संघर्ष है जिसे डा राम मनोहर लोहिया हिंदू बनाम हिंदू के रूप में प्रस्तुत करते थे। डा लोहिया कहते थे इस देश में उदार हिंदू और कट्टर हिंदू की लड़ाई पांच हजार साल से चल रही है लेकिन उसका निर्णय अभी तक नहीं हुआ है। भारत और विशेषकर उत्तर प्रदेश उस कठिन लड़ाई में बुरी तरह उलझा हुआ है।

मुलायम सिंह, डा लोहिया द्वारा वर्णित उसी लड़ाई को लड़ रहे थे। उसी लड़ाई को लड़ते हुए 1989 में उन्हें अयोध्या में उपद्रवी तत्वों को काबू करने के लिए गोली भी चलवानी पड़ी। आज इतिहास इस बात का गवाह है कि मुलायम सिंह ने उन ताकतों से लड़ने का संकल्प लिया और 1993 में वही गठजोड़ बनाया जिसके लिए डा लोहिया ने 37 साल पहले डा भीमराव अंबेडकर के साथ प्रयास किया था। हालांकि तब वह गठजोड़ नहीं हो सका था लेकिन मुलायम ने वह काम कर दिखाया और उसका परिणाम भी प्राप्त किया। तभी सपा और बसपा के तालमेल के बाद फैजाबाद हवाई अड्डे पर नारा लगा कि मिले मुलायम कांशीराम- हवा में उड़ गए जयश्रीराम।

**मुलायम सिंह ने उन ताकतों से लड़ने का संकल्प लिया और 1993 में वही गठजोड़ बनाया जिसके लिए डा लोहिया ने 37 साल पहले डा भीमराव अंबेडकर के साथ प्रयास किया था। लेकिन मुलायम ने वह काम कर दिखाया और उसका परिणाम भी प्राप्त किया**

डा लोहिया ने कहा था कि डा अंबेडकर के होने से यह यकीन होता था कि एक दिन इस देश से जाति व्यवस्था समाप्त हो जाएगी। उसी तरह मुलायम और कांशीराम का यह गठजोड़ अगर बना रहता तो तय था कि सांप्रदायिकता और जातिवाद पर लगाम लगती और वे पराजित होते। उनके पराजय का मतलब न तो किसी को दबाना-कुचलना था और न ही किसी से बदला लेना था बल्कि सद्भाव के साथ सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करना था।

भाजपा के विरुद्ध बने गठजोड़ के पतन के पीछे वे ऐतिहासिक शक्तियां काम कर रही थीं जिसके बारे में स्वामी धर्मतीर्थ ने हिस्ट्री आफ हिंदू इम्पीरियलिज्म में उल्लेख किया है। उनका कहना है कि इस देश में जब भी सामाजिक परिवर्तन की पहल हुई है तो उसे पलट देने के लिए गहरी साजिश रची गई । इसलिए भारत में सामाजिक परिवर्तन हमेशा छला जाता रहा है। मंडल आयोग भी उसका प्रमाण है।

लंबे समय से ठंडे बस्ते में पड़ी मंडल आयोग की रिपोर्ट जिन स्थितियों में लागू हुई वह घटना सभी को विदित है। निश्चित तौर पर उससे लालू प्रसाद और मुलायम सिंह सामाजिक तौर पर मजबूत हुए और देश के अन्य पिछड़ा वर्ग की लम्बे समय से लंबित मांग पूरी हुई।

ठीक उसी वक्त भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने रथ यात्रा निकाल कर देश को धार्मिक आधार पर ध्रुवीकृत कर दिया। ऐसे समय में रथ यात्रा का उद्देश्य जाहिरा तौर पर भले ही कुछ और था मगर जो मीमांसा हुई उससे यही निष्कर्ष निकला कि इसका तात्कालिक लक्ष्य सामाजिक परिवर्तन की धार को कुंद करने और सांप्रदायिकता के माध्यम से सामाजिक न्याय को पटकनी देने का ही था।

उनकी राह में दलित और पिछड़ा वर्ग की एकता यानी मुलायम और कांशीराम की एकता एक बड़ी बाधा थी और सपा बसपा की सरकार गिराकर और मायावती की

सरकार बनाकर उन्होंने उसे भी मिटा दिया।

समाजवादियों ने बांधी गांठ पिछड़ा पावै सौ में साठ' का नारा लगाते हुए मात्र तेरह साल की उम्र में गिरफ्तारी देने वाले मुलायम सिंह इन साजिशों को समझते थे इसलिए उन्होंने एक सच्चे पहलवान और सच्चे समाजवादी की तरह से हारने के बाद लड़ने और लड़ने के बाद फिर जीतने का सिलसिला जारी रखा। वे तीसरी बार 2003 में मुख्यमंत्री बने और चौथी बार 2012 में समाजवादी पार्टी को पूर्ण बहुमत हासिल हुआ तो अखिलेश यादव को सत्ता सौंपी।

दरअसल मुलायम सिंह यादव, महात्मा गांधी, लोहिया, जयप्रकाश और चरण सिंह की विरासत के मजबूत स्तंभ थे। दिखाने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने

**आज जब देश नए सिरे से सांप्रदायिकता और फासीवाद से लड़ रहा है तो मुलायम सिंह की विरासत बहुत प्रेरक हो सकती है**

भले 1980 में अपने संविधान में गांधीवादी समाजवाद को शामिल कर लिया हो लेकिन वास्तव में गांधीवादी समाजवादी तो मुलायम सिंह और उनके समाजवादी साथी ही कहे जाएंगे।

डा लोहिया ने साफ शब्दों में लिखा है कि महात्मा गांधी की हत्या उसी हिंदू बनाम हिंदू की लड़ाई का परिणाम थी जो लंबे समय से इस देश में चल रही है। गांधी को सिर्फ इसलिए नहीं गोली मारी गई कि वे मुसलमानों की रक्षा की बात कर रहे थे बल्कि उन्हें इसलिए भी गोली मारी गई क्योंकि वे इस देश से अस्पृश्यता और जाति व्यवस्था को मिटाने के लिए सबसे बड़े आंदोलन की कमान संभाले हुए थे।

इतिहास गवाह है कि मुलायम सिंह भी उन्हीं शक्तियों के निशाने पर थे। मुलायम सिंह जब लखनऊ के कालिदास मार्ग पर अपने आवास में बैठक कर प्रदेश के सांप्रदायिक तनाव को नियंत्रित कर रहे थे तो अचानक दिल्ली से आए कमांडो ने उनका आवास घेर लिया था। उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री चंद्रशेखर को फोन किया कि यह क्या है? इस पर चंद्रशेखर का कहना था कि उनकी जान को खतरा है। बावजूद इसके मुलायम सिंह बिना डरे

हुए डटे रहे और प्रदेश में सांप्रदायिकता की आंधी से निपटने के लिए उसी तरह रैलियां करते रहे जैसे महात्मा गांधी करते थे।

मुलायम सिंह लोगों को समझाते रहे कि इस देश के मुसलमान और हिंदुओं में कोई फर्क नहीं है। जो मुसलमान इस देश में हैं उनका उन आक्रांताओं से कोई लेना देना नहीं जो देश को लूटकर चले गए। उन्होंने अपनी रैलियों में यह बात भी कही कि इस देश के सारे मुस्लिम शासक वैसे क्रूर और अत्याचारी नहीं थे जैसा बताया जाता है। उनमें से कई शासक बहुत उदार थे और अपने शासन में हिंदुओं को पूरी भागीदारी देते थे।

मुलायम सिंह की इसी वीरता के कारण मद्रास(चेन्नई) में हुई राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद की बैठक में उनका नायक की तरह से स्वागत हुआ। राजीव गांधी, चंद्रशेखर, ज्योति बसु, करुणानिधि, शरद पवार और हरकिशन सिंह सुरजीत सभी ने उनका समर्थन किया और मदद करने का भरोसा दिया। आज जब देश नए सिरे से सांप्रदायिकता और फासीवाद से लड़ रहा है तो मुलायम सिंह की वह विरासत बहुत प्रेरक हो सकती है।

वे डा लोहिया के समाजवादी विचारों को लागू करने का भरसक प्रयास करते थे। डा लोहिया ने जेल, फावड़ा और वोट का कार्यक्रम दिया था। वे उस पर खरे उतरते थे। चाहे नागरिक अधिकारों के लिए आपातकाल का संघर्ष हो, चाहे किसानों के लिए रामकोला की लड़ाई हो या फिर चीन के विरुद्ध आंदोलन का मामला हो, वे संघर्षों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे।

1967 में जब वे पहली बार विधानसभा पहुंचे तो उसी साल दूसरी बार डा लोहिया संसद में पहुंचे थे। फर्रुखाबाद लोकसभा क्षेत्र से डा लोहिया चुने गए थे और उसी का एक क्षेत्र जसवंतनगर भी था। वहां से मुलायम सिंह चुने गए थे। मुलायम सिंह ने वहां से डाक्टर साहब को 10,000 वोटों की लीड दिलाई थी।

रचनात्मक कार्यक्रम चलाने में भी मुलायम सिंह का कोई सानी नहीं है। आज भी लखनऊ में डा लोहिया और जनेश्वर मिश्र के नाम पर बने पार्क उसके प्रमाण हैं। उन्हीं की प्रेरणा से मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने आगरा लखनऊ एक्सप्रेस वे और लखनऊ मेट्रो का रिकार्ड समय में निर्माण कराया। भूमि सेना का गठन भी डा लोहिया के बताए गए रचनात्मक कार्यक्रम का विस्तार था। जयप्रकाश नारायण के नाम पर

संग्रहालय का निर्माण भी उसी का हिस्सा रहा है।

वोट की राजनीति में सपा ने 2004 में लोकसभा की 36 सीटें हासिल करके अपनी प्रभावशाली ताकत बनाई। उसके बाद 2009 में उसकी लोकसभा सीटें भले 23 पर आ गई हों लेकिन 2012 में विधानसभा में 224 सीटें पाकर सपा ने प्रदेश में अपने दम पर पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई।

एक सच्चे समाजवादी के तौर पर मुलायम सिंह को डा लोहिया की सप्तक्रांति और जेपी की संपूर्ण क्रांति का लक्ष्य पाना चाहिए था पर वे वैसा नहीं कर सके लेकिन नवउदारवाद की गंभीर चुनौती के सामने अगर वे अपने को संवैधानिक मूल्यों की रक्षा तक केंद्रित रख सके तो यह भी कोई

**रक्षा मंत्री के रूप में वे चीन के खतरे के प्रति सेना को तैयार करते रहे और बाद में भी लगातार सतर्क करते रहे। वे तिब्बत के सवाल को मजबूती से उठाते थे और चाहते थे कि भारत सरकार को तिब्बत के जायज हक के लिए खड़ा होना चाहिए।**

छोटी बात नहीं है। नवउदारवाद की यह आंधी समाजवादी व्यवस्थाओं को पूरी दुनिया में ध्वस्त कर रही है। पूर्वी यूरोप में सोवियत संघ की समाजवादी व्यवस्था के साथ ही रोमानिया, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, पूर्वी जर्मनी सभी देशों की समाजवादी व्यवस्थाएं ध्वस्त हो गईं। सोवियत संघ टूट गया।

उसी के कारण पश्चिम बंगाल में तीन दशक से चली आ रही वाममोर्चा सरकार ध्वस्त हो गई। त्रिपुरा की सरकार चली गई। केरल की सरकार भी जैसे तैसे खिंच रही है। ऐसे में मुलायम सिंह से यह अपेक्षा रखना कि वे समाजवाद को ले आएंगे कुछ ज्यादा बड़ी अपेक्षा है लेकिन बुर्जुआ लोकतंत्र की सीमाओं में उनसे समाजवादी एजेंडा को लागू करने के लिए

उनसे जो बना उन्होंने करने की कोशिशें कीं। अंग्रेजी की जगह पर हिंदी को लाने के लिए समाजवादी कटिबद्ध थे और मुलायम सिंह ने उसके लिए लगातार अभियान चलाया। हालांकि उसी के लिए अंग्रेजी प्रेस उनका मजाक भी उड़ाता रहा लेकिन वे विचलित नहीं हुए। उसी के साथ उन्होंने उर्दू को भी राज्य की दूसरी सरकारी भाषा का दर्जा देने का प्रयास किया।

रक्षा मंत्री के रूप में वे चीन के खतरे के प्रति सेना को तैयार करते रहे और बाद में भी लगातार सतर्क करते रहे। वे तिब्बत के सवाल को मजबूती से उठाते थे और चाहते थे कि भारत सरकार को तिब्बत के जायज हक के लिए खड़ा होना चाहिए। यह विश्व व्यवस्था के हित में है और भारत का भी हित इसी में है। मुलायम नव उदारवादी अर्थव्यवस्था के खिलाफ भी प्रतिरोध जताते रहे। उनकी पार्टी के प्रस्ताव लगातार बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विरुद्ध होते थे।

उन्होंने पूंजीवादी और सांप्रदायिक समय में समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष ताकतों को एकजुट करने की कोशिश की लेकिन उन शक्तियों से भी नफरत नहीं रखी जिनसे लड़ रहे थे। यानी विचारों पर दृढ़ लेकिन व्यवहार में लचीलापन रखा।

मुलायम सदैव लोकतंत्र के लिए लड़े, समाजवाद के लिए लड़े और संविधान के लिए लड़े। आज अखिलेश यादव भी वही कर रहे हैं। वास्तव में उनका समाजवाद परिवारवाद में नहीं संघर्ष में यकीन करता था। यही उनकी विरासत है। मुलायम सिंह आजादी के अमृत महोत्सव में विदा हुए हैं लेकिन हमें यह याद दिलाते हुए गए हैं कि इस आजादी की हर कीमत पर रक्षा करनी है।

# ऐसे थे मुलायम

अरविन्द मोहन
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

ऐसा कम ही दिखता है कि किसी शख्स की अंतिम यात्रा में जनसैलाब उमड़ पड़े। आंखों में आंसुओं का सैलाब दिखे, उसकी जुदाई के गम में लोगबाग तड़प उठें। विरोधी-समर्थक की खाई पट जाए। नेताजी यानी मुलायम सिंह यादव के दुनिया से रुखसत होने पर जिस तरह सब गमगीन हुए, उसने नेताजी के अतीत के पन्नों पर गौर करने के लिए मजबूर कर दिया।

आखिर क्या था उस काया में जिसके सब दीवाने थे, सब क़ायल थे। कुछ खास न होता तो अंतिम यात्रा के बाद भी सबकी जुबां पर मुलायम सिंह यादव का नाम न होता। सब गमगीन थे और हैं भी। शायद इसे ही कहते हैं शान से रुखसत होना। अतीत के झरोखे से देखने पर पता चलता है कि आखिर क्यों सबके लिए इतने खास थे मुलायम सिंह यादव।

मुलायम ने यह आदर और मान किसी पद पर बैठने भर से नहीं हासिल किया था। जीवन भर की लड़ाई, सिद्धांतों के चुनाव, सही फैसलों पर टिकने और कभी बुनियादी उसूलों से समझौता न करने के चलते यह सब हासिल किया था। अपनी जन पक्षधर राजनीति, समाजवादी और गाँधीवादी उसूलों पर चलकर हासिल किया था।

तीन बार उत्तर प्रदेश जैसे बड़े प्रदेश का मुख्यमंत्री और केंद्र में मंत्री बनने वाले

मुलायम सिंह का एक बार प्रधानमंत्री बनाना भी तय लग रहा था। जीवन के अनेक अवसरों पर सफल तो कभी असफल होने का अनुभव लेते मुलायम आगे बढ़ते गए। धूल झाड़कर नई लड़ाई के लिए तैयार हुए।

सिद्धांत के तौर पर कोई बात कहना, मुट्ठी भर तपे तपाये कार्यकर्ताओं के साथ कोई पोजीशन लेना, किताबी लेखन में शुद्धता बरतना एक बात है और व्यवहार में उसे उतारना या अमल करना एकदम दूसरी बात। मुलायम की राजनीति का ज्यादातर हिस्सा व्यावहारिक मोर्चे पर बीता था। जब 1990 में संघ परिवार अपनी पूरी ताकत से अयोध्या में लगा हुआ था। कोई कायदा कानून मानने को तैयार न था तब मोर्चे पर मुलायम ही थे जिन्हे कानून व्यवस्था की रखवाली से लेकर संविधान और राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत की रखवाली करनी थी।

मुलायम और उनके लोगों ने उत्तर प्रदेश के हर गाँव, शहरों की हर गलियों में सांप्रदायिक शक्तियों से लोहा लिया। ऐसे सिद्धांतों की रखवाली का जिम्मा अकेले मुलायम और उनके साथियों पर नहीं डाला जा सकता। सांप्रदायिक राजनीति को तेज करके देश की सत्ता हथियाने वाले लोग और मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक बना देने वाले लोग इसके लिए ज्यादा जिम्मेदार हैं। न्याय-अन्याय की लड़ाई में न्याय के पक्ष में खड़े मुलायम इसी चलते बड़ा बनाकर निकले। सिर्फ मुसलमानों के मन में ही नहीं सेक्युलर राजनीति के हर पक्षधर के मन में।

बहुत सामान्य किसान, पिछड़ी जाति और पिछड़े गाँव में पैदा मुलायम को राजनीति में भी किसी सुरक्षा के साथ काम करने का अवसर नहीं मिला। उनके नेताओं ने वैचारिक सफाई कराई, चरित्र निर्माण किया लेकिन चुनावी और सत्ता की लड़ाई में साधन से लेकर किसी भी किस्म की मदद नहीं की। मुलायम ने बाद के दिनों में ऐसा अवसर अपने पुत्र अखिलेश से लेकर न जाने कितनों को दिए बल्कि की लोग तो उनकी राजनैतिक कमाई पर ही फलते-फूलते रहे।

1967 की विधायकी से लेकर 1977 की सरकार में जूनियर मंत्री रहते ही यह समझ आ गया कि सत्ता की राजनीति में कैसे कैसे लोग बैठे हैं जिन्होंने गाहे-बगाहे  दांव-पेंच से उन्हें चित करना चाहा पर इस खेल में मुलायम जीते, बचे और सबसे आगे तक आए तो जरूर उन्होंने लोहिया, राजनारायण, जनेश्वर की व्यावहारिक

राजनीति को विस्तार दिया।

मुलायम सिंह ने देश में सबसे लंबे समय तक समाजवादी विचारधारा की पार्टी चलाने का रिकार्ड बनाया है और पार्टी आज भी मजबूत स्थिति में है और चलती जा रही है। पुराने समाजवादी आंदोलन का रिकार्ड आपसी लड़ाई और टूट-फूट का भी है। मुलायम की सपा में बड़ी फूट नहीं हुई और पार्टी निरंतर मजबूत होती गई।

अपनी पहली सरकार के समय मुलायम सिंह ने अपनी राजनैतिक शिक्षा को जमीन पर उतारने की काफी कोशिश की। सांप्रदायिकता से लड़ाई और पिछड़ों के पक्ष में खड़े होने वाला पहलू तो प्रबल था और सबको याद रहा लेकिन इसी दौर में अंग्रेजी की विदाई हुई, मुलायम ने खुद दक्षिण भारत के दौरे किए-जनता दल के विस्तार के लिए। तमिलनाडु में उनके दौरे काफी सफल रहे जबकि वे हिन्दी में ही बोलते थे। उनकी मूर्तियां लगाई गईं। इसी तरह मुलायम तब पाकिस्तान से रिश्ते सुधारने और लोहिया की कल्पना का भारत-पाक महासंघ बनाने की बात भी करते थे। उन्होंने मधु लिमये से यह पूछकर चौंका दिया कि क्या आप मेरे प्रदेश में लोहिया के बताए अनुसार भूमि सेना बनाने में मदद करेंगे क्योंकि अब की स्थिति में उससे ज्यादा रोजगार और पैदावार बढ़ाने की गुंजाइश मुझे दिखाई नहीं देती।

मुलायम ने बहुत पहले 1966 में इटावा में हुए आल इंडिया यादव महासंघ के अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष की जिम्मेवारी निभाई थी। उन्होंने यादव और मुसलमानों का अटूट गठजोड़ बनाया जो शायद ही कभी बहुत कमजोर पड़ा। सामाजिक/जातीय संतुलन साधने में उस्ताद माने गए मुलायम कभी जातिवादी नहीं कहे गए क्योंकि जो जिस काबिलियत का था और जिसमें सलाहियत थी, उसे पार्टी में पूरा मान-सम्मान मिला। यही वजह रही कि सब नेताजी के प्रिय थे और नेताजी सबके प्रिय।

एक इतनी बड़ी पार्टी, देसज विचार की परंपरा को आगे बढ़ाना हो, इतने दबावों के बीच मण्डल की रिपोर्ट मानने का दबाव बनाना या अयोध्या मामले में सरकार कुर्बान करना हो, उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य के प्रशासन में बदलाव करना हो, बड़े नेताओं से अच्छा व्यवहार करना हो और अपने असंख्य कार्यकर्त्ताओं से बेपनाह प्रेम करना हो, मुलायम ने अकेले दम पर यह सब करके अपना मुकाम बनाया था।

बहुत सीनियर नौकरशाह और कैबिनेट सचिव तक पहुंचे सुब्रमण्यम के संस्मरण बताते हैं कि ऊपर से गंवई दिखने वाले और एक साफ वैचारिक आग्रह से शासन करने वाले मुलायम प्रशासन की बारीकियों को किस कुशलता से समझते थे और कैसे उनका व्यावहारिक समाधान निकालते थे। और मौकों पर प्रशासनिक सख्ती दिखाने से भी गुरेज नहीं करते थे। तो यही मुलायम थे, यही उनका तरीका था, यही उनकी कमाई है।

# खांटी समाजवादी थे मुलायम

जयशंकर पांडेय

धोती कुर्ता पहन कर सामंतवाद, जातिवाद, पूंजीवाद और सांप्रदायिकता से लोहा लेने वाली नेताओं की पीढ़ी के आखिरी योद्धा थे मुलायम सिंह यादव। वह, संघर्ष करने, संगठन बनाने और चुनावी राजनीति में चमत्कारी प्रदर्शन करने वाली क्षमताओं के धनी थे।

उत्तर प्रदेश की राजनीति पर चार दशक से भी ज्यादा समय तक छाए रहने की क्षमता रखने वाले मुलायम सिंह को लोग भले क्षेत्रीय क्षत्रप कहें लेकिन भारत में नफरत और सांप्रदायिकता और जातिगत वर्चस्व के विरुद्ध संघर्ष करने का इतिहास जब भी लिखा जाएगा तो उनका नाम उसमें प्रमुखता से दर्ज होगा, उनकी अंतिम यात्रा पर सैफई में उमड़े विशाल जनसमुदाय ने यह साबित कर दिया।

ऐसी अंतिम यात्राएं उन्हीं नेताओं की होती हैं जिनके नाम से जनता का दिल धड़कता है। उन्होंने बार बार चुनाव जीतकर ही नहीं अपनी अंतिम यात्रा में भी यह साबित कर दिया कि `जिसका जलवा कायम है उसका नाम मुलायम है।' यानी मुलायम सिंह की देह सांसारिक अर्थों में भले मौत से हार गई हो लेकिन उनकी कीर्ति पराजित और धूमिल होने वाली नहीं है।

लोग भले कहें कि मुलायम सिंह की राजनीति तब शुरू होती है जब वे महज 28 साल की उम्र में जसवंतनगर क्षेत्र से विधानसभा पहुंचे लेकिन वास्तव में उनका राजनीतिक बपतिस्मा तभी हो गया था जब वह महज 13

साल की उम्र में समाजवादी नेता महेंद्र सिंह की प्रेरणा से गिरफ्तार हुए थे। तब उन्होंने 28 दिन की जेल भी काटी थी। उसी से लग गया था होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

उन्होंने बाकी पंद्रह सालों में पढ़ाई की। राजनीति शास्त्र के शिक्षक बने। इस तरह उन्होंने उस नारे को गांव के स्तर पर साकार कर दिया जो लोग दिल्ली के बड़े विश्वविद्यालयों में लगाते हैं, 'पढ़ो लड़ाई लड़ने को, लड़ो पढ़ाई पढ़ने को, लड़ो समाज बदलने को।' उसी के साथ उनके जेहन में उन नारों का अर्थ भी उतरने लगा कि-- `समाजवादियों ने बांधी गांठ पिछड़ा पावै सौ में साठ। दाम बांधो काम दो वरना गद्दी छोड़ दो। डा लोहिया का फरमान रेल का डिब्बा एक समान या फिर रोटी कपड़ा सस्ती हो दवा पढ़ाई मुफ्ती हो।'

सात बार विधायक और आठ बार लोकसभा के सदस्य रहने वाले मुलायम सिंह तीन बार प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। वे जून 1996 से मार्च 1998 तक भारत के रक्षा मंत्री रहे। उनके सभी कार्यकाल भारी उथल पुथल वाले रहे। मुलायम सिंह के बारे में तमाम राजनीतिक विश्लेषक कहते हैं कि वे तब चमकते हैं जब सत्ता से बाहर होते हैं। यही कारण है जब वे सत्ता में होते थे तो व्यवस्था को बदलने के लिए विपक्ष की भूमिका निभाते थे और जब विपक्ष में होते थे तब तो उस भूमिका में होते ही थे। यही असली समाजवादी चरित्र है।

समाजवादी तब तक शांत बैठ ही नहीं सकते जब तक डा राम मनोहर लोहिया के सपनों की सप्तक्रांति न हो जाए या जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति न हो जाए। साइकिल से चलकर सत्ता तक पहुंचे मुलायम सिंह ने बड़ी गाड़ियों की सवारी करते हुए और हवाई जहाज में उड़ते हुए भी साइकिल को कभी भुलाया नहीं। उन्होंने साइकिल को अपनी पार्टी का चुनाव चिन्ह बनाया और अपने आवास से लेकर बाहर सड़क तक साइकिल को गरिमा प्रदान की।

डॉ राम मनोहर लोहिया की प्रेरणा से गैर-कांग्रेसवाद के रास्ते पर चल कर उन्होंने 1967 में चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में सरकार बनवाने में मदद की तो आपातकाल में जेल यात्रा भी की। 1977 में उत्तर प्रदेश में मंत्री बने। 1989 में मुख्यमंत्री बने तो मंडल आयोग की रपट लागू हुई और उसके क्रियान्वयन में मजबूती देने का काम किया क्योंकि उन्हें पिछड़ा पावै सौ में साठ

का लक्ष्य पूरा होता दिख रहा था। इस बीच अयोध्या के आंदोलन ने जोर पकड़ा तो उन्होंने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन किया। वे भारत के धर्मनिरपेक्ष ढांचे की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध थे।

मुलायम सिंह का बड़ा दूरदर्शी फैसला समाजवादी पार्टी का गठन था। 1992 में उन्होंने पार्टी गठित की। बड़ी बात यह है कि जब डंकल प्रस्ताव और विश्व व्यापार संगठन के माध्यम से दुनिया और देश में वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारीकरण का तूफान उठ रहा हो तब उन्होंने समाजवादी पार्टी के नाम से एक राजनीतिक दल का गठन किया और निराश हो रहे समाजवादियों को एक मंच पर इकट्ठा किया।

उस वक्त ऐसा दौर शुरू हो गया था जब समाजवाद विचार और शब्द के प्रति नफरत फैलाई जा रही थी और कहा जा रहा था कि संविधान की प्रस्तावना में दिए गए समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता शब्द को हटा देना चाहिए था। भारतीय जनता पार्टी जिसने 1980 में अपने गठन के साथ गांधीवादी समाजवाद के सिद्धांत को त्याग दिया था और खुल्लम खुल्ला पूंजीवाद का समर्थन और बहुसंख्यक सांप्रदायिकता का उग्र रूप लेकर उपस्थित थी। कांग्रेस पार्टी ने तो अंतरराष्ट्रीय पूंजी के समर्थन में उदारीकरण की प्रक्रिया 1991 में ही पीवी नरसिंह राव के नेतृत्व में तेज कर दी थी।

उस वातावरण में समाजवादी पार्टी नाम रखना और उस रास्ते पर चलना देश के सबसे बड़े प्रदेश में संघर्ष का बिगुल बजाना एक साहस का काम था लेकिन वे साहस के साथ कौशल भी रखते थे। उन्होंने कांशीराम के साथ गठजोड़ करके और उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को हराकर यह दिखा दिया कि सांप्रदायिकता को कैसे पराजित किया जा सकता है।

महात्मा गांधी, डॉ राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण और चरण सिंह से होती हुई जो समाजवादी गांधीवादी विरासत इस देश का दुनिया में सिर ऊंचा कर सकती है उसी मजबूत कड़ी का नाम है मुलायम सिंह यादव। वे वास्तव में डा लोहिया के जेल, फावड़ा और वोट के सिद्धांत पर चलने वाले नेता थे। उन्होंने जाना था कि निराशा के कर्तव्य क्या हैं और उसे वे पूरा करते थे। उन्हें मालूम था कि लोकतंत्र में कितना संघर्ष किया जाए, कितनी रचना की जाए और चुनाव किस तरह से जीता जाए। उनकी विरासत भविष्य में समाजवादी आंदोलन को नई ऊंचाई तक ले जा सकती है क्योंकि विरासत में भी वही कूवत, दूरदृष्टि और संघर्ष का माद्दा साफ-साफ दिखाई देता है जो कि मुलायम सिंह यादव में था।

(लेखक समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक हैं)

# दिल से भी मुलायम थे नेताजी

शफी आज़मी
वरिष्ठ पत्रकार

जननायक बनने के लिए कार्यकर्ताओं की कितनी अहमियत होती है, यह जानने के लिए नेताजी को करीब से समझना होगा। नेताजी के लिए कार्यकर्ता कितने मायने रखते थे, एक-एक कार्यकर्ता को लेकर उनकी फिक्र के बारे में संस्मरण याद आ रहा है।

बात 2 अप्रैल 2003 की है। मैं हिन्दुस्तान अखबार में था। नेताजी को देवरिया के राजकीय इंटर कालेज मैदान में सभा करनी थी। मुझे कवर करना था। नेताजी गोरखपुर एयरपोर्ट पर विशेष विमान से आए। भीड़ बहुत थी। एयरपोर्ट के विशेष कक्ष में विश्राम-जलपान की व्यवस्था थी। वह कक्ष में दाखिल ही हुए थे कि पीछे से श्री जगदीश यादव जी के साथ मैं और राष्ट्रीय सहारा के वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट श्री मुकेश पाण्डेय जी सामने पहुंच गए। मुकेश जी को देखते ही वह चौंके पहला सवाल? तुम यहां कैसे? मुकेश जी ने बताया कि नेताजी अब यहीं आ गया हूं। खुश हुए। पीठ थपथपाई और बोले- बढ़िया। मेहनत से काम करो। लम्बे अरसे बाद भी पहचान लेने पर मुकेश भाई गदगद हुए। देवरिया में सभा चल रही थी और अभी स्थानीय नेता बोल रहे थे कि मेरे मन में विचार कौंधा। मैने नोटबुक से एक पन्ना अलग किया। उसपर नेताजी के नाम चंद अल्फाज लिखे। सिर्फ इतना ही कि आपके साथ गोरखपुर चलना चाहता

हूं, बातचीत करनी है।

नीचे अपना परिचय लिखकर रुक्का उन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी मंच की सीढ़ियों पर डटे गोरखपुर के भाई सिंहासन यादव जी को सौंपी। पहले वह तनिक हिचकिचाए पर मेरे साथ निजी संबंधों की वजह से हामी भर ली। भाई सिंहासन ने मंच पर पहुंचकर मेरी पर्ची पीछे से नेताजी के हाथ में थमा दी। मैं देख रहा था। नेताजी ने पढ़ा और उसे बगल में बैठे पार्टी के एक वरिष्ठ नेता को थमा दिया। नेताजी का संबोधन चल ही रहा था कि लहीम-शहीम एक शख्स प्रेस गैलरी में आया और पूछा कि शफी आज़मी साहब कौन हैं? मैने कहा-नाचीज़ को ही शफी आजमी कहते हैं तो उसने बताया कि आपको नेताजी के साथ चलना है, मेरे साथ आइए।

एम्बेसडर कार में बायीं जानिब नेताजी, बीच में एक वरिष्ठ नेता बैठे और दाहिनी खिड़की पर मुझे जगह मिली। उस वक्त सपा ने मंडल अध्यक्ष बनाना शुरू किया था। जौनपुर वाले डा केपी यादव पहले और शायद अंतिम अध्यक्ष थे क्योंकि उसके बाद यह व्यवस्था खत्म हो गई। बहरहाल, डा केपी यादव वहां पहुंचे तो नेताजी ने सामने की सीट पर बैठने का इशारा किया।

केपी भाई आगे के दरवाजे पर पहुंचे मगर वहां पहले से मौजूद ब्लैक कैट कमांडों ने आगे बैठने की इजाजत नहीं दी। वह दूसरे वाहन की तरफ बढ़ गए। काफिला आगे बढ़ा तो चिलचिलाती धूप में कार्यकर्ताओं का उत्साह-जुनून देखकर नेताजी ने मुझसे कई बार खिड़की का शीशा गिराकर यह कहते हुए देखने को कहा-लिखिएगा जरूर, कार्यकर्ता कितना पसीना बहा रहे हैं। कंजूसी न करियेगा लिखने में। कार्यकर्ताओं की भीड़ को चीरता हुआ नेताजी का काफिला हाईवे पर आ चुका था। रास्ते में तमाम बातों के बीच नेताजी बीच में यह जरूर कहते-केपी को बुरा लगा होगा, वह नाराज़ हुआ होगा कि उसे गाड़ी में जगह नहीं मिली।

मैंने कहा कि एक कार्यकर्ता के लिए इतने फिक्रमंद क्यों हैं। बस, लगा कि मैंने उनकी दुखती रग पर हाथ रख दिया। रौ में बोलने लगे-आप नहीं जानते, आज जो कुछ हूं, इन कार्यकर्ताओं की बदौलत हूं। ये खफा हो गए तो मैं कुछ नहीं। ये मेरे लिए जीते हैं तो मुझे इनके लिए जीना पड़ेगा ही। गोरखपुर के इंजीनियरिंग कालेज पहुंचने से पहले ही उन्होंने बताया कि दिवंगत दीपनारायण यादव जी के घर चारू चंद्रपुरी कालोनी जाऊंगा, उनके बेटे आनंद यादव को ढांढस बंधाना है।

मैंने जैसे ही इच्छा जताई कि मैं वहीं उतर जाऊंगा, खबर भी फाइल करनी है तो खुश हो गए गोया उन्हें मांगी मुराद मिल गई, तपाक से बोले, यह अच्छा है, वहां से एयरपोर्ट तक केपी को साथ ले लूंगा, उसकी नाराजगी दूर हो जाएगी। मतलब साफ था कि उनके दिमाग में इन 53 किमी में भी केपी की नाराजगी ही घूम रही थी। कार्यकर्ताओं की इस तरह फिक्र करते थे नेताजी।

2007 में चुनाव का बिगुल बज गया था। श्री भानु प्रकाश मिश्र गोरखपुर सदर से सपा प्रत्याशी बनाए गए थे। पार्टी के एक नेता जफर अमीन डक्कू को भानु का प्रत्याशी बनाया जाना पसंद नहीं था। नेताजी इस विरोध से वाकिफ थे।

अभी तक पार्टी फोरम पर ही विरोध था पर संशय था कि विरोध सड़क पर न आ जाए। उन्होंने सभा तय कर दी। नेताजी ने पहले ही रणनीति बना ली थी। वह आए। पहले जफर अमीन डक्कू को बुलाया और उनसे ही घोषणा पत्र पढ़वाकर उनका गुस्सा कम किया। बताया कि डक्कू की पार्टी में काफी अहमियत है। बाद में भानु भाई और डक्कू साहब का हाथ थामकर ऊपर उठाकर अवाम को संदेश दिया कि दोनों एक साथ हैं।

सभा खत्म हुई। नेताजी मंच से नीचे उतरने लगे तो मीडिया के साथियों के साथ उन तक पहुंचने की कोशिश की। उन्होंने इशारे से मुझे आने को कहा। वह बोले-कोई सवाल नहीं, सवाल का जवाब ही छाप दोगे और सभा की बात छूट जाएगी। सभा छापो। मैंने एक दिन बाद छापने का वायदा किया तो वह मान गए। वाहन का दरवाजा पकड़कर खड़े हो गए। सवालों के जवाब दिए। कार में बैठने लगे तो उन्होंने कान में कहा- डक्कू को समझाना, गलती न करे फिर सरकार बनने जा रही है। डक्कू की नाराजगी वैसे भी नेताजी की हिकमत अमली से काफूर हो चुकी थी। इतनी शिद्दत से एक-एक कार्यकर्ता के बारे में जानकारी रखना, उसे मनाना, मरहम लगाना नेताजी को बखूबी आता था। नाम से ही नहीं दिल से भी मुलायम होना कोई नेताजी से सीखे।

# ऐसे ही कोई नहीं बनता है मुलायम सिंह!

मधुकर त्रिवेदी
वरिष्ठ पत्रकार

आजादी के बाद से अब तक उत्तर प्रदेश में 4 3 मुख्यमंत्रियों की नाम पट्टिकाएं लग चुकी हैं। इनमें कई एकाधिक बार मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे हैं लेकिन इस गिनती में एक नाम अलग से दिखाई देता है वह है मुलायम सिंह यादव का। बिना किसी लाग लपेट और संशय के यह बात रिकार्ड में रखी जा सकती है कि इस एक नाम के अलावा जो भी मुख्यमंत्री बने हैं वे अपने संगठन-राजनीतिक दल के नामित रहे हैं। अपने संगठन कौशल से उन्हें बड़ा पद नहीं मिला।

श्री मुलायम सिंह यादव ने खुद कुआं खोदा और फिर पानी पिया। उनकी न कोई राजनीतिक पारिवारिक पृष्ठभूमि थी, न ही वे किसी नामी राजनीतिक घराने से थे। वे एक सामान्य कृषक परिवार से थे जिनकी पढ़ाई किसी नामी गिरामी कॉलेज में नहीं हुई। वे सामान्य मास्टर बने। गांव सैफई के लोकप्रिय खेल कुश्ती के मैदान में दांव पेंच सीखकर कई कुश्तियां लड़ीं। दूर तक तब ऐसी कोई संभावना नहीं दिखाई दे रही थी कि गांव का गबरू पहलवान प्रदेश की राजनीति का केन्द्र बनेगा।

कहावत है पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं। 15 वर्ष की कच्ची उम्र में नहर रेट आंदोलन में जेल जाकर अपनी राजनीतिक यात्रा का श्रीगणेश करने वाला यह किशोर एक दलित गंगा प्रसाद जाटव और बाल्मीकि के घर खाना क्या खा आया कि सामाजिक बहिष्कार की नौबत आ गई। यह तब की बात है जब जाति की जड़ता से निबटना बड़े जोखिम का काम था।

**नहर रेट आंदोलन में जेल जाकर अपनी राजनीतिक यात्रा का श्रीगणेश करने वाला यह किशोर एक दलित गंगा प्रसाद जाटव और बाल्मीकि के घर खाना क्या खा आया कि सामाजिक बहिष्कार की नौबत आ गई। ये थे अपने नेताजी**

यह कहानी आज के नौजवानों के लिए कहानी ही रहेगी कि कैसे मुलायम सिंह जी ने अपने बूते गांव-गली छानते हुए यादवों में जातीय अस्मिता जगाई, दलितों को साथ लिया ओर अपनी टोली में जनेश्वर मिश्र, बृजभूषण शरण तिवारी, मोहन सिंह और मोहम्मद आज़म खान जैसे नगीने भी जुटाए। न केवल उत्तर प्रदेश अपितु कई अन्य राज्यों में भी प्रभाव बढ़ाया। अपने को सेक्युलर ताकतों के बीच प्रतिष्ठित किया।

श्री मुलायम सिंह यादव अपने व्यवहार में दलगत सीमाओं से परे रहे किन्तु यह तथ्य भी भुलाया नहीं जा सकता कि मुख्यमंत्री पद के हर दौर में उन्हें अपनों से ही चुनौतियां मिलती रहीं। केन्द्र की साजिशों के वे शिकार होते-होते बचे तो सिर्फ अपनी त्वरित निर्णय की क्षमता और स्थिति को सही भांपने की वजह से। अयोध्या आंदोलन में उन्होंने जो दृढ़ता दिखाई उसके बहुत लोग कायल रहे किन्तु उनको व्यक्तिगत रूप से कई लांछनों को भी झेलना पड़ा। वे इस आग में तपकर कुंदन से दमके।

राजनीति में माहिर होना ही केवल मुलायम सिंह बन जाना नहीं था। गरीबी का दर्द क्या होता है, वे जानते थे अतः किसान और गरीब उनकी प्राथमिकता में रहे। सुबह 5 बजे से उनका जनसम्पर्क शुरू हो जाता था। हर दुखी की मदद उनका स्वभाव बन गया। मुख्यमंत्री के रूप में जब कोई फाइल आती थी तो उनका जोर रहता था कि कोई छोटा कर्मचारी सजा न पाए। अपनों का संरक्षण, छोटे से छोटे कार्यकर्ता का सम्मान उनसे सीखने लायक था। कार्यकर्ता के सुख-दुःख में शामिल रहने की वजह से ही यह माना जाता था कि किसी की तकलीफ की खबर

उन तक पहुंचाना ही काफी था फिर उसका योगक्षेम देखना उनका काम था। कार्यकर्ताओं से जुड़ाव ऐसा था कि गांव-कस्बों के पचासों लोगों को नाम लेकर बुलाते थे।

विरोध को विरोध नहीं मानते थे, मतभेद माने मनभेद नहीं, यही पाठ तो वे सिखाते थे।

पहली बार मुख्यमंत्री बनते ही चुंगी समाप्ति की घोषणा की। केन्द्र में रक्षामंत्री बने तो शहीद सैनिक जवान का पार्थिव शरीर उनके घर तक पहुंचाने के साथ ससम्मान अंत्येष्टि की व्यवस्था की। साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ाई के वे अप्रतिम योद्धा थे। धर्मनिरपेक्षता के जुझारू सेनापति भी वही थे। वे इस मत के थे कि देश कानून से चलेगा, आस्था से नहीं। सिद्धांत से डिगना उन्होंने नहीं सीखा था, यही उनका जलवा था।

श्री मुलायम सिंह यादव ने समाजवादी पार्टी के रूप में ऐसा संगठन दिया है जोकि भाजपा की राजनीति का दृढ़ता से मुकाबला करने में समर्थ है। मुलायम सिंह यादव की कितनी जनस्वीकार्यता थी उनके निधन पर देशभर के प्रमुख नेताओं द्वारा उनको श्रद्धांजलि देने आने से साबित है। दलीय सीमाओं से परे थे मुलायम सिंह। वे अनोखे और अकेले ऐसे नेता थे जो सबके लिए आदरणीय थे।

आज हर कोई समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव में ही मुलायम सिंह यादव का अक्स देखता है। लोगों को विश्वास है कि मुलायम सिंह यादव की विरासत को श्री अखिलेश जी आगे ले जाएंगे लेकिन हाल फिलहाल तो हर तरफ यही आवाज है कि मुलायम सिंह यादव के निधन के साथ एक युग का अंत हो गया है।

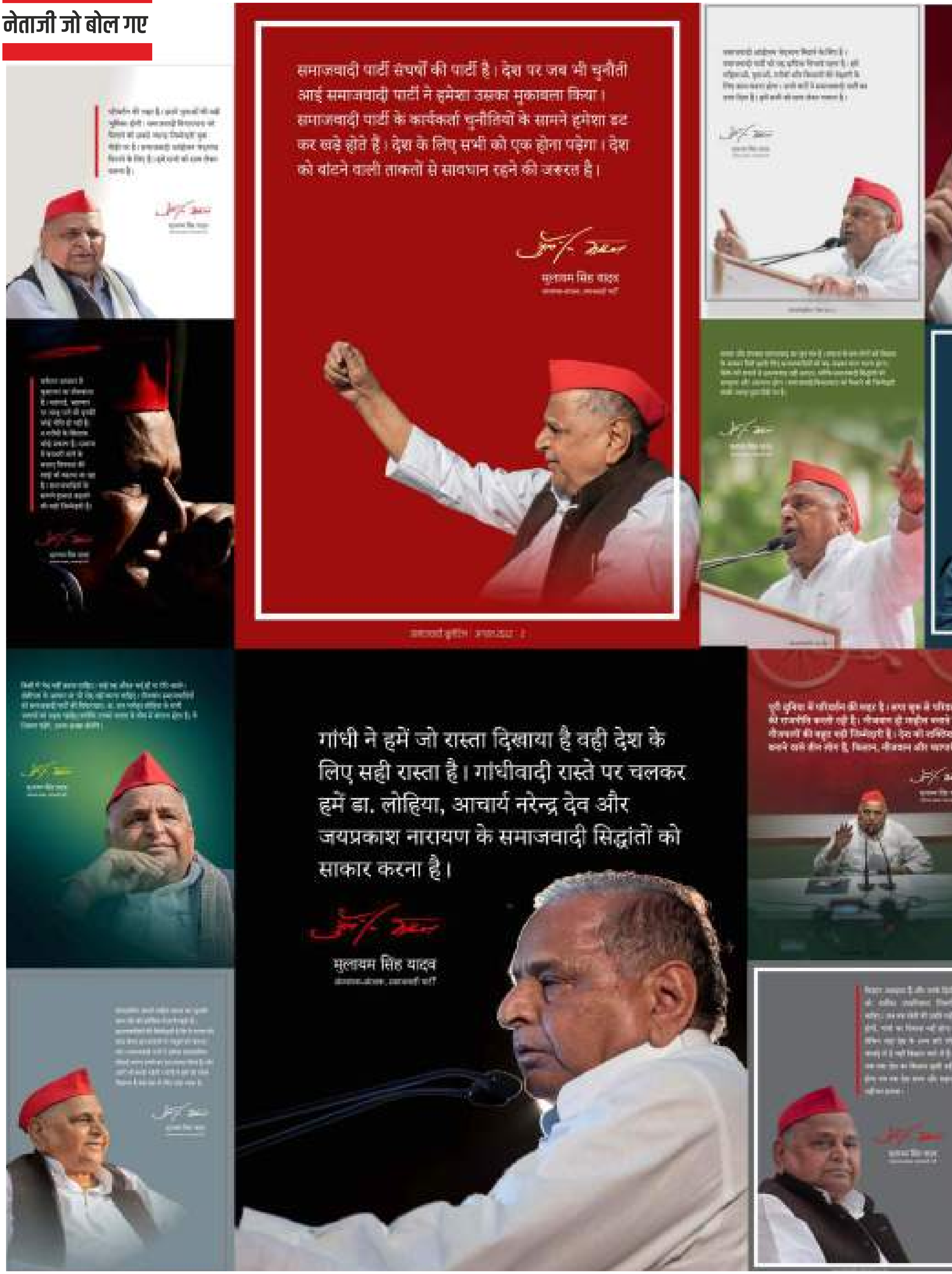
समाजवादी पार्टी संघर्षों की पार्टी है। देश पर जब भी चुनौती आई समाजवादी पार्टी ने हमेशा उसका मुकाबला किया। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता चुनौतियों के सामने हमेशा डट कर खड़े होते हैं। देश के लिए सभी को एक होना पड़ेगा। देश को बांटने वाली ताकतों से सावधान रहने की जरूरत है।
मुलायम सिंह यादव
गांधी ने हमें जो रास्ता दिखाया है वही देश के लिए सही रास्ता है। गांधीवादी रास्ते पर चलकर हमें डा. लोहिया, आचार्य नरेन्द्र देव और जयप्रकाश नारायण के समाजवादी सिद्धांतों को साकार करना है।
मुलायम सिंह यादव

समता और संपन्नता ही समाजवाद का मूल मंत्र है। समाज के सब लोगों को विकास के अवसर मिलें इसके लिए समाजवादियों को बढ़-चढ़कर काम करना होगा। सिर्फ नारे लगाने से समाजवाद नहीं आएगा, बल्कि समाजवादी सिद्धांतों को समझना और अपनाना होगा। समाजवादी विचारधारा को फैलाने की सबसे ज्यादा जिम्मेदारी युवा पीढ़ी पर है।
मुलायम सिंह यादव

### समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय व राज्य सम्मेलन संपन्न

# भाजपा का सफाया करने का संकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी विचारधारा के अलम्बरदार हज़ारों समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं ने लोकतंत्र को आघात पहुंचाने वाली भाजपा का उत्तर प्रदेश से सफाया करने का संकल्प लेते हुए संघर्ष का रास्ता अपनाने की हुंकार भरी। साथ ही लोकतंत्र व संविधान को बचाने के लिए पार्टी कार्यकर्ताओं ने दूसरे दलों के मुकाबले बेदाग, शालीन, विकास के लिए दूरदर्शी, निश्छल छवि के श्री अखिलेश यादव को भरोसे का दूसरा नाम बताकर तीसरी बार निर्विरोध राष्ट्रीय अध्यक्ष चुनकर पार्टी की कमान सौंपी। वहीं श्री नरेश उत्तम को फिर से प्रदेश अध्यक्ष चुना गया।

बीते 28 व 29 सितम्बर 2022 को लखनऊ के रमाबाई अम्बेडकर मैदान में दस हजार से ज्यादा डेलीकेट्स व हजारों कार्यकर्ताओं ने श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में 2024 में उत्तर प्रदेश से भाजपा को भगाने का संकल्प लिया। दोनों सम्मेलन कई मायनों में खास थे। सम्मेलन में सभी वर्गों को मंच पर प्रतिनिधित्व देकर साफ संदेश दिया गया कि समाजवादी पार्टी सभी वर्ग की है और सभी का सम्मान-सत्कार करने वाली पार्टी है। सम्मेलन में हमेशा की तरह इस बार भी किसानों, नौजवानों, महिलाओं, गरीबों, मजदूरों, मजलूमों, बेरोजगारों, पिछड़ों और अल्पसंख्यक समाज के उत्थान की वकालत की गई।

श्री अखिलेश यादव ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर और राष्ट्रीय गान के बाद सम्मेलन का शुभारम्भ किया। कार्यकर्ताओं के उत्साह और भाजपा सरकार की नीतियों के खिलाफ गुस्सा देखते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने नए संकल्प के साथ चलने का आह्वान किया है। उन्होंने कार्यकर्ताओं की नब्ज व जनता की पीड़ा से खुद को जोड़ते हुए ऐलान किया कि भाजपा के झूठ का अब पर्दाफाश होगा। भाजपा सरकार के अन्याय और विद्वेषपूर्ण कार्यवाहियों का डटकर प्रतिरोध होगा। उन्होंने समाजवादियों और अम्बेडकरवादियों से कहा कि संविधान और लोकतंत्र को बचाने के लिए समाजवादी पार्टी को पूरी ताकत और अधिकार दें। सबने समवेत स्वर से उनके नेतृत्व में भरोसे का शंखनाद कर दिया।

कार्यकर्ताओं का उत्साह, संघर्ष करने की हुंकार से स्पष्ट संकेत मिल चुका है कि अब भाजपा की झूठ-फरेब की राजनीति के दिन लदने वाले हैं। उत्तर प्रदेश में भाजपा को समाजवादी पार्टी से ही जवाब मिलेगा और सन् 2024 के लोकसभा चुनाव में परिवर्तन की नई लहर आएगी। समाजवादियों की हुंकार बता रही थी कि लोकतंत्र और संविधान को बचाने के लिए वे डॉ0 लोहिया और डॉ0 अम्बेडकर की विचारधारा को मानने वालों को साथ लेकर भाजपा की बांटो और राज करो की नीति को सफल नहीं होने देंगे।

दो दिन तक पूरा लखनऊ समाजवादी

9वां राज्य सम्मेलन
28 सितंबर 2022

पार्टी मय हो गया था। शहर की तमाम सड़कों से लेकर रमाबाई अम्बेडकर मैदान तक सिर्फ समाजवादी पार्टी कार्यकर्ता ही दिख रहे थे। भारी तादाद में लखनऊ में एकत्र हुए कार्यकर्ताओं ने अनुशासन का भी उदाहरण पेश किया और दो दिन तक किसी भी नागरिक को तकलीफ नहीं होने दी जिस वजह से लोग पार्टी और उसके मुखिया श्री अखिलेश यादव की तारीफ करते नहीं थके। प्रदेश के सभी जिलों से भी ऐसे ही अनुशासन के साथ लखनऊ रवानगी की खबरें आईं। कार्यकर्ताओं के इस तरीके की पार्टी के अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव और दूसरे नेताओं ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की और आगे भी जनता के सवालों पर इसी तरह एकजुटता दिखाने का आह्वान किया।

मंचासीन नेताओं ने भी एक स्वर से कहा कि सन् 2024 में भाजपा को उत्तर प्रदेश में हराना है। भाजपा को सत्ता से हटाने के लिए समाजवादी पार्टी संघर्ष के रास्ते पर चलेगी। भाजपा सरकार के जुल्म और तानाशाही का नये तेवर और हौसले के साथ डटकर सामना करना है।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय और राज्य सम्मेलन में एकत्र नेताओं और कार्यकर्ताओं ने संगठन को बूथस्तर तक मजबूती के लिए सदस्यता अभियान को और तेज करने पर भी बल दिया। तय हुआ कि अगले अधिवेशन तक समाजवादी पार्टी को राष्ट्रीय दल की मान्यता मिल सके इसके लिए देशव्यापी अभियान चलाया जाए।

सम्मेलनों में यह बात साफतौर पर उभरकर सामने आई कि संघर्षों के बूते समाजवादी पार्टी ने जनता की अदालत में यह तथ्य ला दिया है कि भाजपा लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति उपेक्षा का भाव रखती है। संविधान उसके लिए महज एक किताब है। संवैधानिक संस्थानों की मजबूती उसे पसंद नहीं। वह उन्हें लगातार कमजोर करती जा रही है। बुलडोजर संस्कृति भाजपा की पहचान हो गई है। लोकतंत्र कानून से चलता है बुलडोजर से नहीं। अल्पसंख्यक वर्ग और पिछड़े, दलित, शोषित समाज के लोगों के

प्रति भाजपा का रवैया संवेदनहीन है।

सम्मेलनों में समाजवादी पार्टी ने भाजपा को चुनौती देते हुए सवाल किया कि वह अपने अब तक के कार्यकाल में जनहित की पांच योजनाएं और काम ही गिना दे? सम्मेलन में स्पष्ट किया गया कि केन्द्र की भाजपा सरकार ने नोटबंदी और जीएसटी लागू कर देश की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया है। भाजपा सरकार में डालर के मुकाबले रूपया बहुत गिर गया है। महंगाई, भ्रष्टाचार, अपहरण, लूट, डकैती, हत्या, बलात्कार चरम पर है। अपराधी सरकार के साथ साठगांठ किए हुए हैं और पीड़ित को न्याय नहीं मिल रहा है। उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार में पुलिस हिरासत में हुई मौतों का आंकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है।

सम्मेलन में प्रस्तुत व पारित किए गए राजनैतिक-आर्थिक प्रस्तावों में भाजपा सरकार की राजनैतिक और आर्थिक विफलताओं के साथ झूठ का आंकड़ावार पर्दाफाश भी किया गया। यह भी बता दिया गया कि भाजपा की सभी नीतियां पूंजीपति घरानों की पोषक है, बड़े उद्यमी बैंकों का धन लूट रहे हैं तब भी भाजपा सरकार उन्हें छूट पर छूट देते जा रही है। समाज में नफरत की हवा बह रही है और सद्भाव-सौहार्द मिट रहा है।

सम्मेलन की एक राय-एक दिशा यही तय हुई कि भारतीय संविधान को खतरे के साये से बाहर निकालने के लिए भाजपा सरकार को 2024 में सत्ता से हटाकर ही बंधुत्व, समानता और स्वतंत्रता बहाल करनी होगी। अंत में हजारों की तादाद में सम्मेलनों में शिरकत करने आए समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं, डेलीगेट्स, किसानों, महिलाओं, गरीबों, पिछड़ों, दलितों, कमजोर तबके, व्यापारियों, अल्पसंख्यकों, बेरोजगारों के मसले पर जोरदार प्रतिरोध करने के संकल्प के साथ विदा हुए। सम्मेलन को कार्यकताओं के अलावा भाजपा सरकार की नीतियों से बेहाल आम जनता का अपार समर्थन यह साबित कर गया कि अब भाजपा के दिन लदने वाले हैं और 2024 में सपा की फिर लहर आने वाली है।

# साफ़ और बेबाक

**Akhilesh Yadav**
@yadavakhilesh
Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

**Akhilesh Yadav** @yadavakhilesh · Oct 12
आज पहली बार लगा...

बिन सूरज के उगा सवेरा.

**Akhilesh Yadav** @yadavakhilesh · Oct 19
आज संगम पर नेताजी की स्मृति के साथ.

**Akhilesh Yadav** @yadavakhilesh · Oct 23
Vrindavan

**Akhilesh Yadav** @yadavakhilesh · Oct 2
'राष्ट्रपिता' महात्मा गांधी जी की 153वीं जयंती पर उन्हें शत्-शत् नमन।
#GandhiJayanti

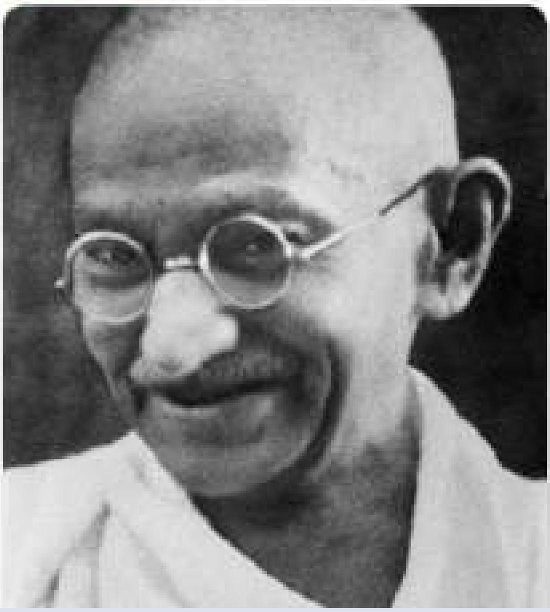

**Akhilesh Yadav** @yadavakhilesh · Oct 8
समाजवादी चिंतक एवं विचारक, 'भारत रत्न' से सम्मानित लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि।

Following

**Akhilesh Yadav** @yadavakhilesh · Oct 31

राष्ट्रीय एकता के प्रतीक, लौहपुरुष 'भारत रत्न' सरदार वल्लभभाई पटेल जी की जयंती पर सादर नमन।

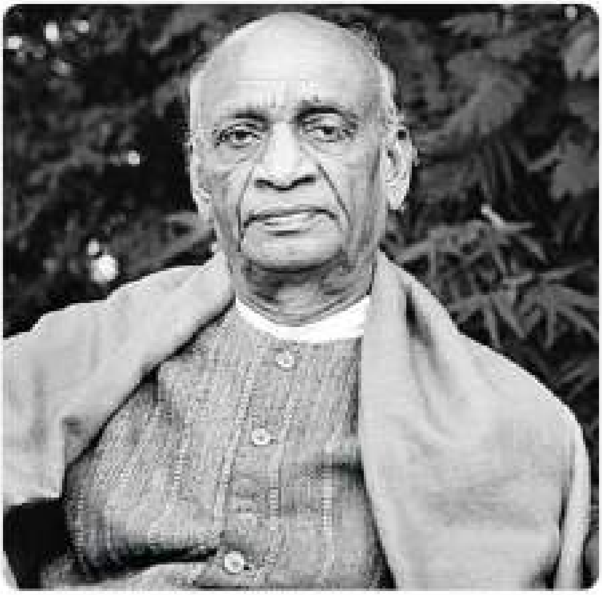

**Akhilesh Yadav** @yadavakhilesh · Oct 1

ब्वॉयज हॉस्टल के खाने में कॉकरोच, फोटो वायरल

सोशल मीडिया पर वायरल हुई तस्वीर, वार्डन ने कहा- कार्रवाई करेंगे

**Akhilesh Yadav** @yadavakhilesh · Oct 27

पूर्व कैबिनेट मंत्री अरविंद सिंह गोप के बड़े भाई स्व. अशोक कुमार सिंह जी के निधन के उपरांत उनके निवास स्थान पहुँच कर अर्पित किए श्रद्धा सुमन।

भावभीनी श्रद्धांजलि!

**Akhilesh Yadav** @yadavakhilesh · Oct 12

आज लोहिया जी की पुण्यतिथि पर उनको श्रद्धांजलि और उनके समाजवादी विचारों को प्रासंगिक बनाकर राजनीति में सार्थक रूप से सक्रिय करनेवाले नेता जी को भी इस संकल्प के साथ नमन कि समाजवाद का ये आंदोलन हम सम्पूर्ण निष्ठा के साथ निरंतर रखेंगे।

**Akhilesh Yadav** @yadavakhilesh · Oct 1

भाजपा के राज में जनता को 5G पहले से ही मिल रहा है :

G = गरीबी
G = घोटाला
G = घपला
G = घालमेल
G = गोरखधंधा

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2021-2023 कुल पृष्ठ : 76 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

# जमीं से आसमां तक
# सदा रहेगा आपका नाम

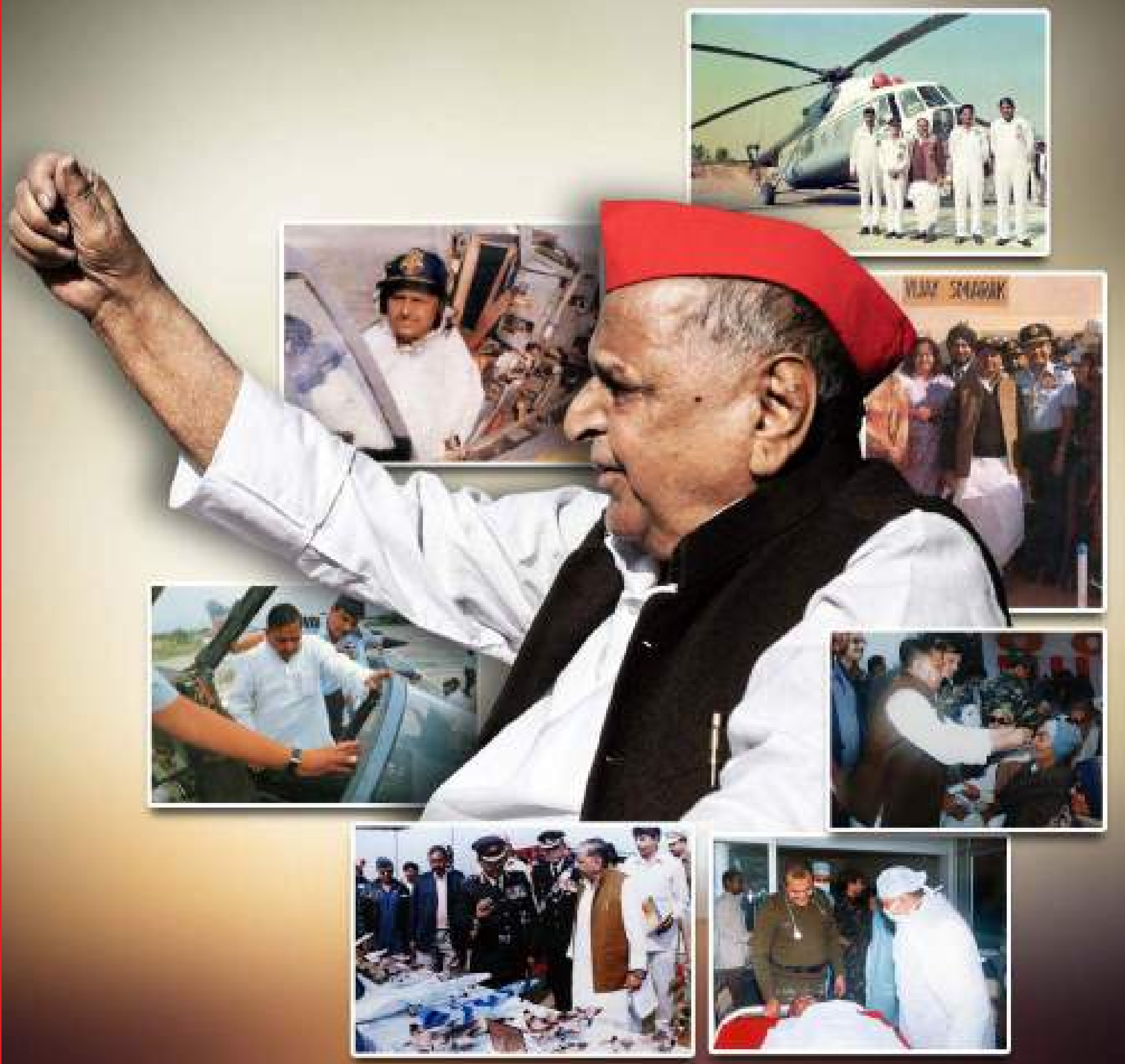

समाजवादी पार्टी

/samajwadiparty

www.samajwadiparty.in